# देश प्रतिदिन

Web.www.deshpratidin.com

E-Mail- deshpratidinnews@gmail.com



**आवश्यकता है**

देश प्रतिदिन हिंदी दैनिक समाचार पत्र को आवश्यकता है ब्लॉक एवं जिले स्तर पर संवाददाता जिला संवाददाता छायाकार ब्यूरो चीफ न्यूज एंकर

( देश प्रतिदिन यूट्यूब चैनल और पोर्टल के लिए) काम करने वाले इच्छुक लड़के लड़कियों की अपना बायोडाटा हमें ईमेल पर सेंड करें या व्हाट्सएप करें।

संपर्क करें :–ई मेल DESHPRATIDINNEWS@GMAIL-COM

व्हाट्सएप नंबर 9807725000



वर्ष : 16 | अंक : 193 | लखनऊ गुरूवार 14 सितम्बर 2023 | (हिन्दी दैनिक) | पृष्ठ : 4 | मूल्य : 1.00 रुपया


## प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 23 को आयेंगे काशी

# अटल विद्यालय समेत 1000 करोड़ की परियोजनाओं की देंगे सौगात

लखनऊ, (संवाददाता)। वाराणसी से सांसद और देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का काशी दौरा प्रस्तावित है। 23 सितंबर को बड़ी सौगात के साथ पीएम काशी आयेंगे। वाराणसी कमिश्नर द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार तकरीबन 3 घंटे तक प्रधानमंत्री मोदी काशी में रहेंगे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम के भूमि पूजन के साथ अटल आवासीय विद्यालय का शुभारंभ और जनपद में चल रहे काशी सांसद सांस्कृतिक महोत्सव के समापन कार्यक्रम से जुड़ेंगे। प्रधानमंत्री के इस दौर में वाराणसी को करीब 1000 करोड़ से अधिक परियोजनाओं की सौगात मिलने वाली है।वाराणसी के कमिश्नर कौशल राज शर्मा के मुताबिक 23 सितंबर को वाराणसी के सांसद और प्रधानमंत्री मोदी का काशी दौरा प्रस्तावित है। पीएम करीब 3 घंटे तक वाराणसी में रहेंगे और लगभग 1000 से अधिक करोड़ की परियोजनाओं का सौगात देंगे।वाराणसी के गंजारी स्थित बनने वाले अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम के भूमि पूजन में पीएम शामिल होंगे जिसके लिए भूमि पहले से ही आवंटित की जा चुकी है और गंजारी में ही प्रधानमंत्री मोदी का कार्यक्रम निर्धारित है। पीएम मोदी करीब 16 मंडल में तैयार किए गए अटल आवासीय विद्यालय का भी शुभारंभ करेंगे।नई तकनीक और आधुनिक व्यवस्थाओं से संपन्न वाराणसी के करसेड़ा ग्राम पंचायत में तैयार किए गए इस सरकारी विद्यालय के माध्यम से श्रमिकों और आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को निशुल्क शिक्षा और रहने–खाने की सुविधा प्रदान की जाएगी।वाराणसी में काशी सांसद संस्कृत महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं में कलाकार प्रतिभाग कर रहे हैं। इसका समापन 20 सितंबर को होगा लेकिन प्रधानमंत्री मोदी 23 सितंबर को काशी आगमन के दौरान फाइनल तक पहुंचने वाले उन कलाकारों से मिलेंगे और उनका हौसला अफजाई करेंगे। इन कलाकारों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे जिस दौरान पीएम खुद मौजूद होंगे। वाराणसी कमिश्नर ने कहा कि लोकल परियोजनाओं का शुभारंभ प्रधानमंत्री के अक्टूबर–नवंबर महीने के विजिट के दौरान करेंगे।

## मोहम्मद आजम खां साहब सच की आवाज हैं : अखिलेश यादव

लखनऊ, (संवाददाता)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि मोहम्मद आजम खां साहब सच की आवाज हैं। उन्होंने बच्चों के बेहतर भविष्य की नींव रखी है, शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय बनाया। मोहम्मद आजम खां साहब सदैव फिरकापरसत ताकतों से लड़ते रहे हैं। यादव ने कहा कि भाजपा सरकार का आचरण संविधान विरोधी और लोकतंत्र विरोधी है। भाजपा सरकार विरोधी दलों के नेताओं के खिलाफ लगातार बदले की भावना से काम कर रही है। इससे पहले भी भाजपा ने मोहम्मद आजम खां साहब की ईमानदार छवि को नुकसान पहुंचाने के लिए फर्जी मुकदमें लगाए थे। उन्हें कोर्ट से राहत मिली। आज पूरी समाजवादी पार्टी उनकी आवाज के साथ खड़ी है। भाजपा सरकार केन्द्रीय संस्थाओं का दुरुपयोग कर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार विपक्षी एकजुटता और इंडिया गठबंधन से डरी हुई है। घोसी विधानसभा उपचुनाव की करारी हार से पूरी भाजपा और बौखला गयी है। सरकार जितनी कमजोर होगी, विपक्ष पर छापे उतने ही बढ़ते जाएंगे। सरकार तानाशाही और केन्द्रीय एजेंसियों का दुरूपयोग बंद करें। भाजपाई याद रखे तानाशाहों के अहंकार का अंत अवश्य होता है। 2024 के लोकसभा चुनाव में जनता लोकतंत्र विरोधी, संविधान विरोधी, तानाशाही आचरण वाली भाजपा सरकार को करारा जवाब देगी।

## जम्मू–कश्मीर: राजौरी में मुठभेड़, दो आतंकी ढेर, सेना का एक जवान शहीद

जम्मू । जम्मू–कश्मीर के राजौरी जिले में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच एक दिन पहले शुरू हुई मुठभेड़ में बुधवार को एक और आतंकवादी मारा गया। जम्मू के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजीपी) मुकेश सिंह ने कहा, राजौरी के नरला इलाके में चल रही मुठभेड़ में दूसरे आतंकवादी को मार गिराया गया है। एक शीर्ष पुलिस अधिकारी ने मंगलवार को कहा था कि नारला इलाके में हुई मुठभेड़ में एक आतंकवादी को मार गिराया गया, जबकि सेना का एक जवान शहीद हो गया। गोलीबारी में एक विशेष पुलिस अधिकारी सहित तीन सुरक्षाकर्मी भी घायल हो गए। जम्मू के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजीपी) मुकेश सिंह ने मंगलवार को कहा, राजौरी जिले में हुई मुठभेड़ में एक आतंकवादी ढेर हो गयाय सेना के एक जवान की जान चली गई, एक पुलिस एसपीओ सहित तीन अन्य घायल हो गए।ष एक 6 वर्षीय कुत्ते (मादा लैब्राडोर) ने अपने संचालक की रक्षा करते हुए अपनी जान दे दी।

## राजस्थान के भरतपुर में बस हादसा, 11 यात्रियों की मौत, 15 अन्य घायल

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान के भरतपुर जिले में एक ट्रेलर ट्रक (भारी सामान ढोने वाला ट्रक) ने बुधवार तड़के एक बस को पीछे से टक्कर मार दी, जिससे उसमें सवार गुजरात के 11 यात्रियों की मौत हो गई और कम से कम 15 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि बस गुजरात के यात्रियों को उत्तर प्रदेश के मथुरा ले जा रही थी, तभी वह तड़के करीब साढ़े चार बजे राजस्थान के भरतपुर में हादसे का शिकार हो गई। पुलिस के मुताबिक, बस लखनपुर इलाके में अंतरा फ्लाईओवर पर रुकी थी, तभी ट्रेलर ट्रक ने उसे पीछे से टक्कर मार दी। उन्होंने बताया कि हादसे में बस में सवार पांच पुरुष और छह महिला यात्रियों की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस नियंत्रण कक्ष के अनुसार, मृतकों की पहचान अंतू, नंदराम, लल्लू, भरत, लालजी, उसकी पत्नी मधुबेन, अंबाबेन, कंबुबेन, रामूबेन, अंजूबेन और अरविंद नामक यात्री की पत्नी मधुबेन के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि सभी मृतक गुजरात के भावनगर जिले के दिहोर के रहने वाले थे।

## पांच साल तक नहीं हुई सिविल जज परीक्षा, उम्र एक्सपायर होने पर झारखंड हाईकोर्ट ने दी राहत

रांची (एजेंसी)। झारखंड में जूनियर डिविजन सिविल जज नियुक्ति परीक्षा में 35 साल की अधिकतम उम्र सीमा पार करने वाले अभ्यर्थियों को हाईकोर्ट से बड़ी अंतरिम राहत मिली है। कोर्ट ने झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) को आदेश दिया है कि उम्र सीमा एक्सपायर होने की वजह से परीक्षा से वंचित हो रहे अभिषेक कुमार एवं अन्य को ऑफलाइन परीक्षा फार्म भरने की अनुमति दी जाय। इनकी परीक्षाएं भी ली जाएंगी और रिजल्ट भी निकलेगा। अभिषेक कुमार एवं अन्य ने झारखंड हाईकोर्ट में याचिका दायर कर कहा था कि वे झारखंड में सिविल जज जूनियर डिविजन के पद पर नियुक्ति की परीक्षा की तैयारी कई वर्षों से कर रहे हैं, लेकिन राज्य सरकार ने पिछले पांच साल से कोई परीक्षा नहीं ली। इस वजह से उनकी उम्र निर्धारित उम्र सीमा 35 वर्ष से ज्यादा हो चुकी है और वे परीक्षा से वंचित हो रहे हैं। उन्होंने अदालत से उम्र सीमा में छूट देने की गुहार लगाई थी। चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने दायर करने वाले छात्रों को अंतरिम राहत देते हुए जेपीएससी को निर्देश दिया कि इनके फॉर्म 21 सितंबर तक ऑफलाइन स्वीकार किए जाएं। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता सौरभ अरुण और अमित कुमार कुमार सिन्हा ने पैरवी की।

# महंगाई दर के मामले में टॉप पर है राजस्थान- भाजपा ने कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे को दिया जवाब

नयी दिल्ली (एजेंसी)। महंगाई को लेकर एक बार फिर से कांग्रेस और भाजपा के बीच आरोप–प्रत्यारोप का नया दौर शुरू हो गया है। इस बार कांग्रेस और भाजपा के बीच महंगाई को लेकर आरोप–प्रत्यारोप का यह नया दौर जीवन बीमा पॉलिसी के सरेंडर करने के आंकड़ों को लेकर शुरू हुआ। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने महंगाई को लेकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर मोदी सरकार पर हमला बोला तो भाजपा की तरफ से पलटवार करते हुए भाजपा आईटी सेल के हेड अमित मालवीय ने कांग्रेस शासित राजस्थान के महंगाई दर में लगातार टॉप पर बने रहने का दावा करते हुए कहा कि महंगाई पर कांग्रेस बात न ही करे तो बेहतर होगा। खड़गे ने महंगाई को लेकर मोदी सरकार पर निशाना साधते हुए एक्स ( पहले ट्विटर) कर कहा, लूट की कोई नहीं सीमा, महंगाई ने छीना जीवन बीमा! मोदी सरकार की मुनाफाखोरी की नीति के चलते एक आम परिवार का घर चलाना मुश्किल हो चला है। जानलेवा महंगाई का परिणाम यह है कि जरूरी जीवन बीमा पॉलिसी भी लोग सरेंडर करने पर मजबूर हो गए हैं। पिछले 5 सालों में 47 प्रतिशत लोगों ने जीवन बीमा पॉलिसी लौटा दी है। अगर ये है जनता की जेब का हाल, तो नहीं चाहिए ऐसा अमृत काल!खड़गे के एक्स पर रिप्लाई करते हुए मालवीय ने कहा, खड़गे जी, महंगाई पर कांग्रेस बात न ही करे तो बेहतर होगा ! राजस्थान महंगाई दर में लगातार टॉप पर बना हुआ है। अगस्त के महंगाई दर के आंकड़ों के हिसाब से टॉप 6 में से 5 घमंडिया गठबंधन और गैर–भाजपा शासित राज्य हैं– राजस्थान, तेलंगाना, झारखंड, उड़ीसा और कर्नाटक!जीवन बीमा पॉलिसी के सरेंडर के खड़गे के आंकड़ों पर सवाल उठाते हुए भाजपा नेता ने आगे कहा, ष्आप एक ऐसी रिपोर्ट को बढ़ा–चढ़ाकर दिखा रहे हैं, ।

# दिल्ली में महंगाई सबसे कम, सीएम केजरीवाल बोले- फ्री सर्विस स्कीम ने जनता को जबर्दस्त राहत पहुंचाई

नयी दिल्ली(एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को दावा किया कि राष्ट्रीय राजधानी में महंगाई सबसे कम है और निशुल्क शिक्षा, उपचार, बिजली तथा जलापूर्ति जैसी योजनाओं ने यहां के लोगों को 'बेहद राहत पहुंचाई है। मंगलवार को जारी आधिकारिक आंकड़ें के अनुसार, मुख्य रूप से सब्जियों के दाम में नरमी से खुदरा मुद्रास्फीति अगस्त में घटकर 6.83 प्रतिशत पर आ गई है। जुलाई में खुदरा महंगाई दर 15 महीने के उच्चस्तर 7.44 प्रतिशत पर पहुंच गई थी। हालांकि, यह अब भी भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के संतोषजनक स्तर से ऊपर है।केजरीवाल ने एक खबर साझा की, जिसमें कुछ राज्यों में महंगाई के आंकड़ों की तुलना राष्ट्रीय औसत से की गई थी। उन्होंने सोशल मीडिया मंच 'एक्सश पर जारी पोस्ट में कहा कि उनकी सरकार की निशुल्क सेवा योजनाओं ने दिल्ली की जनता को महंगाई से राहत दिलाई है। केजरीवाल ने कहा, "आंकडों के अनुसार हर बार की तरह दिल्ली में महंगाई सबसे कम है। दिल्ली सरकार की निशुल्क शिक्षा, निशुल्क उपचार, महिलाओं के लिए निशुल्क परिवहन, निशुल्क बिजली–पानी, निशुल्क तीर्थयात्रा ने लोगों को भारी राहत पहुंचाई है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के मंगलवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, खाद्य मुद्रास्फीति अगस्त महीने में 9.94 प्रतिशत रही, जो इससे पिछले महीने यानी जुलाई में 11.51 प्रतिशत थी। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति पिछले साल अगस्त में सात प्रतिशत थी। आरबीआई ने चालू वित्त वर्ष में मुद्रास्फीति 5.4 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया है।

## सीएम योगी आदित्यनाथ ने बाबा महाकाल के किए दर्शन, गर्भगृह में पूजन करके लिया आशीर्वाद

उज्जैन (एजेंसी)। उतर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ आज महाकाल की नगरी उज्जैन पहुंचे हैं। उन्होंने महाकालेश्वर मंदिर में भगवान महाकाल के दर्शन किए। बाबा महाकाल के दर्शन–पूजा करने के साथ ही उनका आशीर्वाद लिया। योगी आदित्यनाथ ने गर्भग्रह में भगवान महादेव की पूजा अर्चना की। इसके बाद सीएम योगी देवी अहिल्याबाई होलकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण भी करेंगे। श्रीनाथ मंदिर में ध्वज स्तंभ के लोकार्पण कार्यक्रम में भी शामिल होंगे। बाबा महाकाल के दर्शन के बाद योगी आदित्यनाथ नाथ संप्रदाय के प्रमुख स्थल भर्तृहरि गुफा जाएंगे। भर्तृहरि गुफा के मठाधीश पीर योगी महंत रामनाथ महाराज के सान्निध्य में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का भव्य स्वागत किया जाएगा।सीएम योगी आदित्यनाथ आज इंदौर में देवी अहिल्या बाई की 228वीं पुण्यतिथि पर आयोजित शुगणीजन सम्मान एवं पुरस्कार वितरणश कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। वे अहिल्या बाई की पालकी यात्रा में भी शामिल होंगे। अहिल्योत्सव समिति ने सीएम योगी के आगमन के चलते कार्यक्रम में फेरबदल करते हुए कार्यक्रम स्थल बदला है।देवी अहिल्या की पालकी हमेशा की तरह गांधी हॉल से राजवाड़ा तक निकलेगी, लेकिन कार्यक्रम रवींद्र नाट्य गृह में होगा। सीएम योगी आदित्यनाथ इंदौर के किसी सामाजिक आयोजन में शामिल हो रहे हैं।

# संसद विशेष सत्र को शुरू होने में रह गए सिर्फ 5 दिन, पर अभी तक नहीं दी गई एजेंडे की जानकारी नहीं...कांग्रेस ने उठाया सवाल

नयी दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने संसद के विशेष सत्र के लिए एजेंडे की सूचना नहीं होने को लेकर बुधवार को एक बार फिर सवाल उठाया और कहा कि सत्र आरंभ होने में केवल पांच दिन शेष है, लेकिन शायद 'एक व्यक्ति को छोड़कर एजेंडे के बारे में किसी के पास जानकारी नहीं है। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने अतीत में हुई संसद की कुछ विशेष बैठकों का उल्लेख भी किया और कहा कि विशेष बैठकों से पहले कार्यसूची की जानकारी उपलब्ध होती थी। उन्होंने किसी का नाम लिए बिना एक्स पर पोस्ट किया, "आज 13 सितंबर है। संसद का पांच दिवसीय विशेष सत्र पांच दिन बाद शुरू होगा और एक व्यक्ति (शायद दूसरे को भी) को छोड़कर किसी को भी एजेंडे की जानकारी नहीं है। पिछले प्रत्येक अवसर पर जब भी विशेष सत्र या विशेष बैठकें आयोजित की जाती थीं, तो कार्यसूची के बारे में पहले से जानकारी होती थी। संसद का विशेष सत्र 18 से 22 सितंबर तक आयोजित किया जाएगा। रमेश ने कहा, "26 नवंबर, 2019 को संविधान की 70वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में केंद्रीय कक्ष में विशेष बैठक हुई। 30 जून, 2017 को ळैज् लागू करने के लिए आधी रात को केंद्रीय कक्ष में संयुक्त विशेष सत्र हुआ। 26 और 27 नवंबर, 2015 को संविधान दिवस मनाने के लिए विशेष बैठक आयोजित हुई। उनके अनुसार, "13 मई, 2012 को राज्यसभा और लोकसभा की पहली बैठक की 60वीं वर्षगांठ मनाने के लिए विशेष बैठक हुई। 22 जुलाई, 2008 को वाम दलों द्वारा संप्रग–1 सरकार से समर्थन वापस लेने के बाद विश्वास मत के लिए लोकसभा का विशेष सत्र आयोजित किया गया । कांग्रेस नेता ने कहा कि 26 अगस्त, 1997 से 1 सितंबर, 1997 तक भारतीय स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ मनाने के लिए विशेष सत्र हुआ। 3 जून, 1991 से 4 जून, 1991 तक अनुच्छेद 356(3) के प्रावधान के तहत हरियाणा में राष्ट्रपति शासन की मंजूरी के लिए राज्यसभा का विशेष सत्र (158वां सत्र) आयोजित हुआ।

## लखनऊ यूपी प्रेस क्लब में शोषित समाज अधिकार पार्टी की हुई प्रेस वार्ता

### सर्वसम्मति के साथ राजकुमार गौतम बनाए गए राष्ट्रीय अध्यक्ष

देश प्रतिदिन

उ0प्र0 प्रेस क्लब में शोषित समाज अधिकार पार्टी ( एस. एस.ए.पी) की प्रेस वार्ता आयोजित की गयी जिसमें पार्टी संरक्षक डी०एस० धीरज जी द्वारा बताया गया कि श्री राजकुमार गौतम के कर्तव्यनिष्ठा व लगनशीलता को देखते हुए शोषित समाज अधिकार पार्टी ( एस. एस. ए. पी.) के राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया गया है। जिस प्रस्ताव को उपस्थित कार्यवाहक पदाधिकारियों ने सर्व सम्मति पारित किया तथा पार्टी के नवनियुक्त राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजकुमार गौतम जी से उम्मीद की जाती है कि वे कार्य को देश हित, समाजहित तथा पार्टी हित को ध्यान में रखते हुए पार्टी को आगे बढ़ाने का कार्य करेंगे।

# सम्पादकीय

## गर्मजोशी के रिश्ते

दिल्ली में संपन्न जी–20 शिखर वार्ता की सफलता से भारत ने खूब वाहवाही पायी। वहीं सम्मेलन की समाप्ति के बाद राजकीय यात्रा पर भारत आए सऊदी क्राउन प्रिंस की उपस्थिति में तमाम समझौते इस सम्मेलन के एक बोनस की तरह हैं। सऊदी अरब के साथ भारत के रिश्ते सदाबहार रहे हैं। लेकिन निवेश व अन्य मोर्चों पर साझेदारी ने रिश्तों को और गहराई दी है। वास्तव में हाल के वर्षों में प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच जो निकटता बढ़ी है, उसका प्रभाव अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति पर भी नजर आया है। हाल के दिनों में अमेरिका से सऊदी अरब के रिश्तों में खटास जगजाहिर है। जी–20 सम्मेलन के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन व प्रिंस सलमान के मिले हाथों को थामे प्रधानमंत्री के हाथों वाला चित्र अंतर्राष्ट्रीय राजनय में चर्चा का विषय रहा। बहरहाल, भारत और सऊदी अरब के बीच हुई द्विपक्षीय वार्ता के ठोस परिणाम सामने आए। इस दौरान सार्वजनिक उपक्रमों व निजी क्षेत्रों के बीच पचास महत्वपूर्ण समझौते हुए। हाल के दिनों में जहां भारत से सऊदी अरब को निर्यात बढ़ा, वहीं आयात में भी खासी वृद्धि हुई। ऐसे दौर में जब कोरोना संकट व रूस–यूक्रेन युद्ध के बाद दुनिया की अर्थव्यवस्था हिचकोले खा रही है। इससे पहले भी जब 2019 में प्रिंस सलमान भारत आए थे तो उन्होंने सौ अरब डॉलर का निवेश करने की घोषणा की थी। अब इस दिशा में साझा टास्क फोर्स बनाने की घोषणा दिल्ली वार्ता में हुई है। दरअसल, प्रधानमंत्री मोदी खाड़ी देशों से बेहतर संबंध बनाने को अपनी प्राथमिकता देते रहे हैं। वे पिछले कुछ वर्षों में दो बार सऊदी अरब का दौरा भी कर चुके हैं। निस्संदेह, मध्यपूर्व में एक बड़ी ताकत होने के कारण सऊदी अरब से बेहतर रिश्तों के खास मायने हैं। कहीं न कहीं इस्लामिक देशों पर खासे प्रभाव वाले सऊदी अरब को भारत पाक पर दबाव बनाने वाले सहयोगी के रूप में भी देखता है। जिसके जरिये पाक के निरंकुश व्यवहार पर नकेल कसी जा सके। हाल के वर्षों में भारत–सऊदी अरब के बीच सालाना व्यापार का पांच हजार करोड़ डॉलर तक पहुंचना दोनों देशों के बीच बेहतर होते रिश्तों की बानगी है। कई बड़ी भारतीय कंपनियों ने पिछले दिनों सऊदी अरब में दो सौ करोड़ अमेरिकी डॉलर का निवेश किया। वहीं सऊदी अरब की कंपनियां दो साल पहले तक तीन सौ करोड़ अमेरिकी डॉलर का निवेश भारत में कर चुकी थीं। दरअसल, प्रिंस सलमान सऊदी अरब की अर्थव्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन करके उस टैग को हटाना चाहते हैं कि वह सिर्फ तेल से चलने वाली अर्थव्यवस्था है। तभी वे उत्पादन, पर्यटन, तकनीक आदि के क्षेत्र में बड़े निवेश को आमंत्रित करते हुए भारत को एक भरोसेमंद सहयोगी के रूप में देख रहे हैं। भारत भी सऊदी अरब के लिये उभरते बाजार के रूप में निवेश का भरोसेमंद स्थल है। जब भारत विश्व की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था से तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने की ओर बढ़ने का उद्घोष करता है तो निवेशकों के लिये एक भरोसा पैदा होता है। वहीं दूसरी ओर भारतीय प्रतिभाओं व तकनीशियनों से भी सऊदी अरब को खासी उम्मीद है। जिसके जरिये वह अपने 2030 के विजन को यथार्थ में बदल सके। जिसमें उसकी महत्वाकांक्षी 'इको–सिटी' बसाये जाने की योजना भी शामिल है। यही वजह कि ग्लोबल कम्युनिटी का हिस्सा बनने को आतुर सऊदी अरब भारत जैसे देशों से संबंध मजबूत कर रहा है। इसी कड़ी में महाराष्ट्र में सऊदी अरब के सहयोग से बनने वाला महत्वाकांक्षी 'वेस्ट कोस्ट रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल्स प्रोजेक्ट' दोनों देशों के बेहतर होते संबंधों की बानगी है। दूसरी ओर जी–20 सम्मेलन में जब प्रधानमंत्री ने 'इंडिया–मिडिल ईस्ट–यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर' की घोषणा की तो इसमें सऊदी अरब की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो गई। इस प्रोजेक्ट को चीन के 'बेल्ट एंड रोड परियोजना' के जवाब के रूप में देखा जा रहा है। बहरहाल, प्रिंस सलमान की वह टिप्पणी सुखद अहसास कराती है जिसमें उन्होंने कहा था कि सऊदी अरब की आबादी का सात फीसदी हिस्सा भारतीयों का है, जिनका वे अपने नागरिकों की तरह ख्याल रखते हैं। निस्संदेह, दोनों देशों के बीच हुए हालिया समझौते संबंधों को नये आयाम देंगे।

## लोकतंत्र में श्राप का क्या काम ?

भोपाल से भारतीय जनता पार्टी की लोकसभा सदस्य प्रज्ञा ठाकुर, फिर से श्राप देती नजर आ रही हैं। इस बार वे तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के पुत्र उदयनिधि पर बरस पड़ी हैं जिन्होंने हाल ही में सनातन धर्म को मलेरिया और कोरोना के वायरस जैसा बतलाते हुए कहा था कि ये जितनी जल्दी नष्ट हो जायें उतना ही अच्छा। मंगलवार को भोपाल की भेल (बीएचईएल) कंपनी के गेट पर वेतन वृद्धि की मांग पर कर रहे ठेका श्रमिकों का अनशन खत्म करवाने पहुंची थीं। अपने भाषण में उन्होंने जूनियर स्टालिन के बयान को अभद्र तो बताया ही, कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा मटन बनाये जाने पर उन्हें विधर्मी भी करार दिया। प्रज्ञा ने कहा कि, ये लोग (राहुल) कुछ भी कर सकते हैं– जनेऊ व तिलक लगा लेते हैं तो क्रॉस भी पहन सकते हैं। उनका गुस्सा यहीं तक नहीं ठहरा। उन्होंने कांग्रेस प्रवक्ता रणदीप सिंह सुरजेवाला को कहा कि श्वे कहां के तोपचंद हैं जो किसी को श्राप देंगे?श सुरजेवाला ने भाजपा के मतदाताओं को राक्षसी प्रवृत्ति का बतलाया था। उदयनिधि ा के बयान के बाद द्रविड़ मुनेत्र कषगम के नेता ए राजा ने सनातन को कुष्ठ रोग व एड्स जैसा बतला दिया। एक्टर प्रकाश राज ने भी सनातन धर्म की तुलना डेंगू से कर दी थी। इन सभी को एकमुश्त श्राप देते हुए प्रज्ञा ठाकुर ने कहा कि श्प्रकाश राज नायक नहीं, खलनायक हैं।श उनका कहना था कि श्जिसे यह नहीं पता कि वह कहां रहता है और किसके खिलाफ बोल रहा है, वह खलनाक ही हो सकता है। आगे उन्होंने यह भी कहा कि श्जिसने सनातन धर्म को जैसा कहा, वह वैसा ही भोगे। जिसने इस धर्म को डेंगू कहा उसे डेंगू मिले, जिसने मलेरिया कहा उसे वही मिले और जिसने उसे कुष्ठ रोग कहा उसे भी वही प्राप्त हो।श उन्होंने इन सभी बयान देने वालों को उनके द्वारा उल्लेखित बीमारियां भरपूर मिलने की बात कही। प्रज्ञा ठाकुर द्वारा इस प्रकार किसी को श्राप देने का मामला पहला नहीं है। मालेगांव बम विस्फोट कांड की आरोपी प्रज्ञा ने महाराष्ट्र पुलिस के विशेष जांच दल प्रमुख हेमन्त करकरे के बारे में 2019 में बयान दिया था कि उनकी (करकरे) मौत इसलिये हुई थी क्योंकि उन्होंने करकरे को श्राप दिया था। साध्वी के अनुसार पुलिस कस्टडी में जांच के दौरान करकरे ने उन्हें प्रताड़ित किया था। वे कहती हैं– मैंने करकरे को कहा था कि तेरा सर्वनाश होगा। मेरे श्राप के कुछ ही दिनों के बाद 2008 में करकरे आतंकवादियों के हाथों मुंबई हमले के दौरान मारे गये थे। वैसे जब इस पर हंगामा हुआ तो उसका देश भर में विरोध हुआ था। अनेक वरिष्ठ सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारियों ने इस पर कड़ी आपत्ति जताई थी। इसके दबाव में उन्होंने अपना बयान यह कहकर वापस ले लिया कि इससे देश के दुश्मनों को फायदा हो रहा है ।

# बड़े जल विद्युत प्रोजेक्ट नीति पर हो पुनर्विचार

पंकज चतुर्वेदी

हिमाचल प्रदेश का बड़ा हिस्सा अचानक आई तेज बरसात और जमीन खिसकने से बुरी तरह प्रभावित हुआ है। जहां आपदा आई नहीं वहां के लोग भी आशंका में जी रहे हैं। राज्य के नेशनल हाईवे व अन्य सड़कों के यातायात पर बुरी तरह असर हुआ। कई सौ गांवों में बिजली व जल आपूर्ति व्यवस्था चरमरा गयी थी। सैकड़ों लोग मारे गये व कई लापता हुए। अनुमानित हजारों करोड़ का नुकसान है। पहाड़ों के धसने से घर, खेत से लेकर सार्वजनिक संपत्ति का जो नुकसान हुआ है उससे उबरने में राज्य को सालों लगेंगे। गंभीरता से देखें तो ये हालात भले ही आपदा से बने हों लेकिन इन आपदाओं को बुलाने में इंसान की भूमिका भी कम नहीं। जब दुनियाभर के शोध कह रहे थे कि हिमालय पर्वत जैसे युवा पहाड़ पर पानी को रोकने, जलाशय और सुरंगें बनाने के लिए विस्फोटक के इस्तेमाल के अंजाम अच्छे नहीं होंगे, तब हिमाचल की जल ध ाराओं पर छोटे–बड़े बिजली संयंत्र लगा कर उसे विकास का प्रतिमान बताया जा रहा था। नेशनल रिमोट सेंसिंग एजेंसी, इसरो द्वारा तैयार देश के भूस्खलन नक्शे में हिमाचल प्रदेश के सभी 12 जिलों को बेहद संवेदनशील की श्रेणी में रखा गया है। देश के कुल 147 ऐसे जिलों में संवेदनशीलता की दृष्टि से मंडी को 16वें स्थान पर रखा गया है। यह आंकड़ा और चेतावनी फाइल में कैद रही और इस बार मंडी में तबाही सामने आ गयी। ठीक यही हाल शिमला का हुआ जिसका स्थान इस सूची में 61वें नम्बर पर दर्ज है। प्रदेश में 17,120 स्थान भूस्खलन संभावित क्षेत्र अंकित हैं, जिनमें से 675 बेहद संवेदनशील मूलभूत सुविधाओं और घनी आबादी के करीब हैं। इनमें सर्वाधिक स्थान चंबा जिले में हैं, उसके बाद के क्रम में मंडी, कांगड़ा, लाहौल–स्पीति, ऊना, कुल्लू, शिमला, सोलन आदि हैं। यहां भूस्खलन की दृष्टि से किन्नौर जिले को सबसे खतरनाक माना जाता है। बीते साल भी किन्नौर में दो हादसों में 38 से ज्यादा लोगों की जान चली गई थी। इसके बाद किन्नौर जिला में भूस्खलन को लेकर भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण के विशेषज्ञों के साथ–साथ आईआईटी, मंडी व रुड़की के विशेषज्ञों ने अध्ययन किया है। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार, हिमाचल प्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 97.42 प्रतिशत भूस्खलन संभावित है। हिमाचल सरकार की डिजास्टर मैनेजमेंट सेल द्वारा प्रकाशित एक अध्ययन ने पाया कि बड़ी संख्या में हाइड्रोपॉवर स्थल पर धरती खिसकने का खतरा है। कम से कम 10 ऐसे मेगा हाइड्रोपॉवर स्थल हैं जो कि मध्यम और उच्च जोखिम वाले भूस्खलन क्षेत्रों में स्थित हैं। राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने विभिन्न एजेंसियों के माध्यम से सर्वेक्षण कर भूस्खलन संभावित सैकडों स्थल चिन्हित किए हैं। चेतावनी के बाद भी किन्नौर में, एक हजार मेगावाट की करछम और 300 मेगावाट की बासपा परियोजनाओं पर काम चल रहा है। एक बात और समझनी होगी कि वर्तमान में बारिश का तरीका बदल रहा है और गर्मियों में तापमान सामान्य से कहीं अधिक पर पहुंच रहा है। ऐसे में मेगा जलविद्युत परियोजनाओं को बढ़ावा देने की राज्य की नीति को एक नाजुक और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील क्षेत्र में लागू किया जा रहा है। वैसे हिमाचल प्रदेश में पानी से बिजली बनाने का कार्य 120 सालों से जारी है जो इसके पूर्ण राज्य घोषित होने से पहले ही शुरू हो गया था। शुरुआत वर्ष 1908 में चंबा में 0.10 मेगावाट क्षमता की एक छोटी जल विद्युत परियोजना के निर्माण से शुरू हुई थी। इसके बाद वर्ष 1912 में औपचारिक रूप से शिमला जिले के चाबा में 1.75 मेगावाट क्षमता का बिजली संयंत्र शुरू हुआ जिसे ब्रिटिश भारत की बिजली जरूरतों को पूरा करने के लिए स्थापित किया गया था। इसके बाद यहां और बिजली संयंत्र लगाने की संभावनाएं तलाशी जाने लगीं। इसी योजना के तहत मंडी जिले के जोगिन्द्रनगर में 48 मेगावाट की बड़ी परियोजना का निर्माण कार्य शुरू किया गया जो वर्ष 1932 में पूरा हुआ। आज हिमाचल में 130 से अधिक छोटी–बड़ी बिजली परियोजनाएं चालू हैं जिनकी कुल बिजली उत्पादन क्षमता 10,800 मेगावाट से अधिक है। सरकार का इरादा 2030 तक राज्य में 1000 से अधिक जलविद्युत परियोजनाएं लगाने का है जो कुल 22,000 मेगावाट क्षमता की होंगी। इसके लिये सतलुज, व्यास, रावी और पार्वती समेत तमाम छोटी–बड़ी नदियों पर बांधों की कतार खड़ी कर दी गई है। हिमाचल सरकार की चालू, निर्माणाधीन और प्रस्तावित परियोजनाओं की कुल क्षमता ही 3800 मेगावाट से ज्यादा है। हिमाचल प्रदेश में जलवायु परिवर्तन की चोट कितनी गहरी है, इसका

अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि प्रदेश के 50 स्थानों पर आईआईटी मंडी द्वारा विकसित आपदा पूर्व सूचना यंत्र लगाये गए हैं। भूस्खलन जैसी आपदा से पहले ये लाल रोशनी के साथ सायरन बजाते हैं लेकिन इस बार आपदा इतनी तेजी से आई कि ये उपकरण काम के नहीं रहे। कई शोध पत्र कह चुके हैं कि हिमाचल में अंधाधुंध जल विद्युत परियोजनाओं से कई दिक्कतें आ रही हैं। पहला इसका भूवैज्ञानिक प्रभाव है, जिसके तहत भूस्खलन, तेजी से मिट्टी का ढहना शामिल है। दूसरा प्रभाव जलभूवैज्ञानिक है जिससे झीलों और भूजल स्रोतों में जल स्तर कम हो रहा है। तीसरा, बिजली परियोजनाओं में नदियों के किनारों पर खुदाई और बह कर आये मलबे के जमा होने से वनों और चरागाहों में जलभराव बढ़ रहा है। चौथा खतरा है, सुरक्षा में कोताही के चलते हादसों की संभावना। सच है कि विकास का पहिया बगैर ऊर्जा के घूम नहीं सकता लेकिन ऊर्जा के लिए ऐसी परियोजनाओं से बचा जाना चाहिए जो हिमाचल प्रदेश को हादसों का प्रदेश बना दें।

# जनतंत्र की अनिवार्य शर्त स्वतंत्र अभिव्यक्ति

विश्वनाथ सचदेव

हाल ही में संपन्न हुए जी–20 आयोजन की 'शानदार सफलता' के बारे में बहुत कुछ कहा जा चुका है। यह बात अपने आप में कम महत्वपूर्ण नहीं कि प्रधानमंत्री मोदी के आलोचक भी यह बात स्वीकार कर रहे हैं कि कुछ सदस्य देशों के विरोध के बावजूद इस सम्मेलन में एक 'सर्वसम्मत' सामूहिक विज्ञप्ति जारी की जा सकी। भारत से लेकर अमेरिका तक के कॉरिडोर का मुद्दा हो या रूस–यूक्रेन का मुद्दा या फिर अफ्रीकी यूनियन को जी–20 का सदस्य बनाने का मामला, इन सबको भारत की दृष्टि से जी–20 की महत्वपूर्ण उपलब्धियों के रूप में ही गिना जायेगा। जहां तक इस पूरे आयोजन का सवाल है, निश्चित रूप से यह भव्य और शानदार था। मजाक में ही सही, पर कहा जा रहा है कि जी–20 के आगामी मेजबान के लिए आयोजन की यह भव्यता एक बड़ी चुनौती बन जायेगी। आयोजन की समाप्ति पर हमारे प्रधानमंत्री मीडिया से 'मिलने' आये थे। उम्मीद की जा रही थी कि वे संभवतरू मीडिया को संबोधित करेंगे, पर वह हाथ हिलाते हुए 'सबको धन्यवाद' कह कर ही उत्सुक मीडिया के सामने से निकल गये। मीडिया की निराशा स्वाभाविक है। सच पूछा जाये तो यह एक मुद्दा है जिसे लेकर भारत में, और भारत से बाहर भी, चर्चा हो रही है। हमारे प्रधानमंत्री प्रेस के सवाल–जवाब से कतराते हैं, यह बात जग–जाहिर है। भाजपा सरकार के दो कार्यकाल पूरे हो रहे हैं। इन लगभग नौ सालों में प्रधानमंत्री का एक भी प्रेस–सम्मेलन में भाग न लेना चर्चा का ही नहीं, आलोचना का विषय भी बना हुआ है। और यह भी सही है कि प्रधानमंत्री मोदी इस आलोचना से परेशान होते हुए भी नहीं दिख रहे। लगता है उन्हें विश्वास है कि उनका मीडिया–प्रबंधन इस आलोचना से आसानी से उबर सकता है। दुनिया भर के मीडिया कर्मी इस सम्मेलन को कवर करने के लिए आये हुए थे। सबके पास पूछने के लिए कुछ था। खासकर दुनिया के इतने बड़े–बड़े नेताओं का सम्मेलन मीडिया के लिए भी एक महत्वपूर्ण अवसर होता है। उम्मीद की गयी थी कि सम्मेलन की संयुक्त विज्ञप्ति के जारी किये जाने के अवसर पर राष्ट्राध्यक्षों की द्विपक्षीय वार्ताओं के बारे में बड़े नेता मीडिया से मुखातिब होंगे, पर ऐसा हुआ नहीं। और कहा यह जा रहा है कि सम्मेलन के मेजबान राष्ट्र भारत ने ऐसा कुछ होने नहीं दिया। भारत–अमेरिका की द्विपक्षीय वार्ता के बाद मीडिया को बहुत उम्मीद थी कि अमेरिकी राष्ट्रपति और भारत के प्रधानमंत्री सामूहिक रूप से मीडिया को संबोधित करेंगे– फिर चाहे यह संबोधन प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान हुए एक–एक सवाल जैसा ही क्यों न हो। पर ऐसा कुछ हुआ नहीं। यह नहीं बताया जा रहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन के साथ आये पत्रकारों को संबोधित करने का अवसर उन्हें नहीं दिया गया। अमेरिकी राष्ट्रपति के प्रवक्ता के अनुसार 'राष्ट्रपति बाइडेन ऐसी प्रेस–वार्ता के लिए तैयार थे, पर मेजबान राष्ट्र की असहमति के कारण ऐसा हो नहीं पाया।' अपने मीडिया से राष्ट्रपति बाइडेन ने बात तो की, पर भारत में नहीं, इंडोनेशिया में। वहां पहुंचकर उन्होंने यह कहना भी जरूरी समझा कि उन्होंने जी–20 सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री मोदी से हुई बातचीत में प्रेस की स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की रक्षा का मुद्दा भी उठाया था। भारत की ओर से अभी तक इस बारे में कुछ नहीं कहा गया है, पर अपने आप में यह बात कम महत्वपूर्ण नहीं है कि भारत और अमेरिका के नेताओं ने इस विषय पर बातचीत की। अमेरिकी राष्ट्रपति ने वियतनाम में जाकर बताया कि उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी से 'मानवीय अधिकारों, प्रेस की स्वतंत्रता और सिविल सोसायटी के सम्मान' करने की बात कही थी। ज्ञातव्य है कि प्रधानमंत्री मोदी जब अमेरिका की राजकीय यात्रा पर गये थे तब भी वार्ता के दौरान यह मुद्दे उठे थे और बाद में चर्चा का विषय भी बने थे। प्रेस की स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की रक्षा का सवाल जनतांत्रिक मूल्य और आदर्शों के साथ जुड़ा है। अमेरिका और भारत दोनों जनतांत्रिक देश हैं, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के संदर्भ में दोनों देश अपनी प्रतिबद्धता घोषित करते रहते हैं। दोनों देशों के संविधानों में इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है। इसीलिए यह बात थोड़ी अजीब लगी थी जब बड़े नेताओं ने मीडिया से सीधे बात करने में अपनी असमर्थता दिखायी। आखिर वह क्या विवशता थी जिसके चलते इस आशय का निर्णय किया गया। इस जी–20 सम्मेलन में मीडिया के लिए विशेष प्रबंध किये गये थे। इस बात की भी सावधानी बरती गयी थी कि मीडिया को दी गयी सुविधाओं का समुचित प्रचार हो। लेकिन सम्मेलन के आखिरी दिन प्रधानमंत्री मोदी का मीडियाकर्मियों के सामने से हाथ हिलाते हुए निकल जाना यह भी बता रहा था कि कहीं कुछ है जो हमारे प्रधानमंत्री को मीडिया से परहेज रखने के लिए विवश करता है। प्रधानमंत्री मोदी की सरकार का दूसरा कार्यकाल

समाप्त होने जा रहा है। वे शायद दुनिया के अकेले ऐसे जनतांत्रिक नेता होंगे जिसने प्रेस से एक निश्चित दूरी बनाये रखना जरूरी समझा है। प्रधानमंत्री की एक भी प्रेस कॉन्फ्रेंस नहीं हुई पिछले नौ–दस सालों में। एक बार जरूर आये थे प्रधानमंत्री पत्रकारों के समक्ष, पर तब उनसे पूछे गये सवालों के जवाब गृहमंत्री अमित शाह ही दे रहे थे। उस 'प्रेस–वार्ता' में प्रधानमंत्री ने पूरा समय चुप्पी साध रखी थी। यहां यह कहना जरूरी है कि अपने इस लंबे कार्य–काल में प्रधानमंत्री जी ने कुछ पत्रकारों से बात अवश्य की है। टीवी पर भी बात करते हुए दिखे हैं प्रधानमंत्री। पर कुल मिलाकर यह ऐसे ही पत्रकार थे जो उनसे यह जानना चाह रहे थे कि 'वह आम काटकर खाना पसंद करते हैं या चूस कर'! यह विस्मय का चिह्न हटना ही चाहिए। प्रेस की स्वतंत्रता और महता जनतांत्रिक व्यवस्था का अभिन्न और जरूरी अंग है। न इसकी उपेक्षा होनी चाहिए, न इसका दुरुपयोग। दुर्भाग्य से जी–20 के इस शानदार आयोजन में यह कमी कहीं न कहीं खलने वाली है। जनतंत्र की जननी कहते हैं हम अपने देश को। आयोजन के दौरान राजधानी दिल्ली में इस आशय के ढेरों पोस्टर भी लगे थे। लेकिन स्वतंत्र और सजग प्रेस की यह जनतांत्रिक शर्त कहीं न कहीं अधूरी रह गयी। इस 'भव्य' और 'सफल' आयोजन के कर्ता–धर्ताओं को यह अवश्य बताना चाहिए कि अमेरिकी पत्रकारों को भी अमेरिका के राष्ट्रपति से बात करने के लिए वियतनाम तक पहुंचने का इंतजार क्यों करना पड़ा? और यह भी कि अमेरिकी प्रवक्ता का यह कहना कितना उचित है कि भारत के प्रधानमंत्री– कार्यालय ने अनुमति नहीं दी थी, अन्यथा राष्ट्रपति बाइडेन तो प्रेस– वार्ता के लिए तैयार थे?

# गौरवशाली हिंदी भाषा, साहित्य का वैश्विक आकाश

संजीव ठाकुर

हिंदी भाषा करोड़ों भारतीय के दिलों में बसी हुई भाषा है। हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा होने का गौरव प्राप्त है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहां भी है ष्राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक हैष् हिंदी की सार्वभौमिक स्वीकार्यता के कारण ही भारतीय राजनेताओं ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया था। उल्लेखनीय है कि हिंदी भाषा विदेशों में जितनी फल फूल रही है बल्कि हिंदी बोलने वाले भारतवंशी कई देशों के राष्ट्र प्रमुख भी हैं जैसे ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक, मॉरीशस के राष्ट्रपति पृथ्वीराज सिंह रूपन, पुर्तगाल के एंटोनियो कोष्टा प्रधानमंत्री, श्री इरफान गुयाना के राष्ट्रपति, सुरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिका प्रसाद संतोखी, और सेसिल के राष्ट्रपति रामखेलावन पदस्थ हैं। इन देशों में हिंदी के प्रचार–प्रसार के अलावा अंतर्राष्ट्रीय बाजार भी हिंदी के विस्तार का बड़ा माध्यम बना हुआ है। हिंदी मूलतः बड़ी विशाल एवं आसानी से बोली जाने वाली, लिखी जाने वाली भाषा है। भारत की भौगोलिक विशालता और विविधता के बावजूद हिंदी सर्व स्वीकार्य और देश की सर्व सम्मत भाषा है। यह अलग बात है कि अभी तक संवैधानिक रूप से इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हो पाया है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय आंदोलनकारियों ने यह महसूस किया की एकमात्र हिंदी भाषा ही ऐसी भाषा है जो दक्षिण के कुछ क्षेत्र को छोड़कर पूरे देश की संपर्क भाषा है। भारत के संविधान में कुल 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। पर हिंदी भाषा ही एक ऐसी भाषा है जो भारत में विभिन्न भाषा भाषाई नागरिकों के मध्य विचार विनिमय और संपर्क के लिए एक बड़ा सहारा है। हिंदी के विशाल स्वरूप को मद्दे नजर रख पूर्व राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद जी ने भी कहा षहिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का या भाषा का बहिष्कार नहीं कियाष यह शब्द हिंदी की पवित्रता और व्यापकता को इंगित करते हैं। वर्तमान परिस्थितियों एवं समय काल मैं पूरे विश्व में 45 करोड़ लोगों द्वारा बोले जाने वाली भाषा है। इसकी सरलता एवं सहजता विश्व के लोगों को अत्यंत प्रभावित भी करती है। हिंदी के विद्वानों,शिक्षाविदों, लेखकों, रचनाकारों और युवा लेखकों द्वारा हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने में अहम भूमिका भी निभाई है। कई नामचीन विद्वान लेखक जिन्होंने हिंदी को वैश्विक भाषाई शिखर पर पहुंचाया है। इसी अनुक्रम में 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एकमतेन हिंदी को भारत की राजभाषा बनाने का निर्णय लिया और 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने का निर्णय भी लिया गया था। और हिंदी दिवस मनाने का एकमात्र उद्देश्य राजकीय कार्यालयों इसके व्यापक प्रचार प्रसार एवं पत्राचार में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की ही है। हिंदी भाषा को पूरे विश्व में द्वितीय भाषा के रूप में माना जाता है। हिंदी नए वैश्विक स्तर पर अपने चलन के कारण अंग्रेजी भाषा को भी काफी पीछे छोड़ दिया है। आज हिंदी भाषा का कंप्यूटर,इंटरनेट ई बुक, सोशल मीडिया, विज्ञापन, टेलीविजन रेडियो आदि क्षेत्र में व्यापक स्तर पर प्रयोग किया जा रहा है। भारत की विशाल जनसंख्या विदेशी व्यापारियों के लिए एक बड़ा उपभोक्ता बाजार है। यही कारण है कि विदेशी कंपनियां अपने सभी विज्ञापनों एवं सामानों में हिंदी भाषा का उपयोग कर भारतीय जनमानस को अपने उत्पादों के प्रति आकर्षित करना चाहती है।यही वजह है कि हिंदी का व्यापक प्रचार–प्रसार भी इसी माध्यम से हो रहा है। विदेशों में भारतीय फिल्मों ने भी हिंदी का बड़ा और वृहद प्रचार प्रसार किया है। ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, रूस में निवासरत भारतीय लोग हिंदी के प्रचार में निरंतर लगे हुए हैं। वहां हिंदी बोली तथा समझी जाती है। एनी बेसेंट ने सत्य कहा है कि भारत के विभिन्न प्रांतों में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं में जो भाषा सबसे प्रभावशाली बन कर सामने आती है वह है हिंदी, जो हिंदी जानता है पूरे भारत की यात्रा कर हिंदी बोलने वाला से हर तरह की जानकारी प्राप्त कर सकता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भी अपने सामानों को बेचने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग करना पड़ रहा है। भारत में कुछ काले अंग्रेज लोग जो सिर्फ महानगरों में अंग्रेजी को ही महत्त्व देते हैं, उन्हें इस बात को समझ जाना चाहिए की भविष्य में हिंदी का भविष्य वैश्विक स्तर पर उज्जवल है। और उन्हें हिंदी भाषा बोलने में शर्म नहीं आनी चाहिए। अंग्रेजी भाषा एक अंतरराष्ट्रीय भाषा है वह जरूर बड़ी कंपनियों में विदेश में नौकरी दिलाने का माध्यम बन सकती है, पर हिंदी देश का गौरव और नागरिकों की आत्माओं में बसी एक पवित्र धारा है ।अंग्रेजी भाषा रोजगार मूलक जरूर हो सकती है, पर केवल इसी कारण हिंदी की अवहेलना और उपेक्षा किसी भी स्तर पर तर्कसंगत नहीं है। भारतीयों को हिंदी के आत्म गौरव को विस्मृत नहीं करना चाहिए। हिंदी देश को भावनात्मक एकता के सूत्र में बांधे में सक्षम भारत की एकमात्र सशक्त भाषा है। हिंदी की गहराई तथा विशालता किसी बात से इंगित होती है कि भारतीय ग्रंथों और बड़े मूर्धन्य लेखकों की किताबों का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में किया गया है । और हिंदी की रामायण गीता रामचरितमानस वैश्विक स्तर पर पढ़ी जाती है। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर शीर्ष में सम्मान देने की आवश्यकता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने हिंदी की प्रगति के लिए कुछ पंक्तियां कही है जो आज भी उल्लेखनीय है, निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल, बृज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल। जय हिंदी जय हिंदुस्तान हिंदी भाषा अमर रहे।

अभिनेता गौरव कुमार सिंह के लिए डिप्टी सीएम बृजेश पाठक जी से वार्तालाप की और उसके बाद दूसरे डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य जी से भी मुलाकात की और इस तरह के प्रोग्राम को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने अपना बातें रखी गौरव कुमार जी ने

# प्रेमी निकला युवती का हत्यारा, पुलिस ने किया पर्दाफाश

देश प्रतिदिन

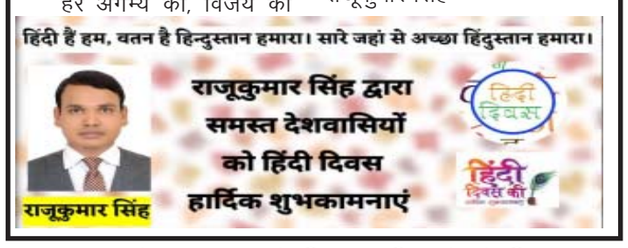

सहजनवा गोरखपुर। शैलेश त्रिपाठी की एक रिपोर्ट पीपीगंज थाना क्षेत्र के जसवल चौराहा सिसई घाट रोड के किनारे झाड़ी में अज्ञात एक 20 वर्षीय युवती की लाश 11सितम्बर 2023 सोमवार को पाई गई थी। जिसकी सूचना पाकर मौके पर सीओ कैम्पियरगंज योगेन्द्र सिंह व थानाध्यक्ष पीपीगंज आशीष कुमार सिंह पहुंच कर फोरेंसिक टीम बुलाकर जांच पड़ताल कर सैंपलिंग की गई। युवती की शिनाख्त के लिए फोटो सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया गया था। सोशल मीडिया पर हुआ वायरल फोटो उसी दिन देर शाम तक युवती के घर वालों तक पहुंच गया था। जिसकी पहचान मुस्कान उर्फ रूपांजली पुत्री राजेंद्र कुमार निवासिनी एल्युमिनियम फैक्ट्री सुड़िया कुआं थाना शाहपुर जनपद गोरखपुर के रूप में हुई। जो गोरखपुर में एक कपड़े की दुकान में नौकरी करती थी। मुस्कान के कातिल तक पहुंचने के लिए तथा हत्या के कारण के पता लगाने के लिए पीपीगंज थाना में मुकदमा पंजीकृत कर अपराध तथा अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गोरखपुर गौरव ग्रोवर द्वारा टीम गठित किया गया। और पुलिस युवती के मोबाइल नंबर का काल डिटेल खंगाली तो जिस नंबर से ज्यादा बातचीत हुई थी उस व्यक्ति को पुलिस छानबीन शुरू कर तलाश में जुट गई। उस नंबर को स्तेमाल करने वाला गोरखनाथ थाना क्षेत्र राजेन्द्र नगर मोहल्ला में किराए के मकान से बुधवार को गिरफ्तार कर कड़ाई से पूछताछ किया तो उसने अपना नाम जितेन्द्र साहनी पुत्र सुभाष साहनी ग्राम पण्डितपुर खजुरगावा थाना कैम्पियरगंज जनपद के रूप में हुई। जितेन्द्र साहनी ने पुलिस को बताया कि मुस्कान उर्फ रूपांजली से एक वर्ष से प्रेम प्रसंग चल रहा था। पुलिस को और अपने बयान में उसने बताया कि मुस्कान को अपने घर बुलाकर उसकी हत्या कर साक्ष्य मिटाने के मकसद से दोस्त की चार पहिया वाहन में लादकर लाश को जसवल चौराहा सिसई घाट रोड के किनारे झाड़ी में फेंक दिया था। वहीं उसे यह नहीं पता था कि कानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं। जुर्म करने वालों के लाख कोशिशों के बावजूद आखिर एक दिन पकड़े जाते हैं। गिरफ्तार करने वाले टीम में थानाध्यक्ष पीपीगंज आशीष कुमार सिंह, उपनिरीक्षक रामदयाल गिरी, कांस्टेबल रामशंकर तिवारी, रामनारायण शुक्ल, उमेश कुमार सिंह शामिल रहे।

# महापौर शहर ,एसपी सिटी एवं आईजीएल के बिजनेस हेड एस के शुक्ल ने कोतवाली थाने में स्थापित किए गए वाटर कूलर हुआ उद्घाटन '।

देश प्रतिदिन

सहजनवा गोरखपुर। इण्डिया ग्लाईकॉल्स लिमिटेड के बिजनेस हेड एस के शुक्ल ने कोतवाली थाना परिसर में वाटर कूलर स्थापित कराया तथा जिसका लोकार्पण पुलिस अधीक्षक नगर कृष्ण कुमार विश्नोई (आईपीएस),महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव के साथ बिजनेस हेड एस के शुक्ल ने संयुक्त रूप से किया। लोकप्रिय गोरखपुर शहर के मेयर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में यह वाटर कूलर लगवाया गया है। इसके साथ ही व्यापार प्रमुख एस के शुक्ल ने बताया की जिस तरह से जनपद की पुलिस आज जनता के सुरक्षा, संरक्षा में कार्य कर रही है वह काबिले तारीफ है और यह छोटी सी भेट सभी फरियादियो तथा थाना स्टाफ के लिए है। इसके साथ ही एस के शुक्ल ने बताया की आज उत्तर प्रदेश सुरक्षित हाथो में है।वरिष्ठ प्रबंधक प्रशासन एवं जनसम्पर्क डॉ सुनील कुमार मिश्रा ने कहा की बिजनेस हेड के नेतृत्व में जनपद में जनहित की बहुत सारी योजनाएं संचालित हो रही है। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक नगर आईपीएस कृष्ण कुमार विश्नोई जी ,मेयर मंगलेश श्रीवास्तव एवं गरिमामई उपस्थिति बिजनेस हेड एस के शुक्ल की रही। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियो ने कहा की आईजीएल आज जनपद में जनसेवा के कार्यों को बड़ी तेजी से कर रहा है,तथा अन्य उद्यमियों को भी प्रेरणा लेते हुए आगे आकर जनहित के कार्यों में भागीदारी करनी चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने आईजीएल संस्था की जमकर तारीफ किया और बताया की आईजीएल के सहयोग से आज शहर में अपराध की निगरानी की जा रही है। इंस्पेक्टर अंजुल चतुर्वेदी ने सभी अतिथियों को पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया और आईजीएल द्वारा कराये जा रहे जनहित के कार्यों की भूरी भूरी प्रशंसा किया। मौके पर उपस्थित उप निरीक्षक अरविंद राय ने आईजीएल संस्था की तारीफ किया और आभार जताया।इसके साथ पुलिस स्टॉफ भारी संख्या में उपस्थित रहे।

## संघर्ष करो



खेरक कविता – राजुकुमार सिंह,

जीवन ईश्वर का एक उपहार है,
हमेशा दुखी मत रहो, सदा प्रसन्न रहो।
संघर्षों से हार कर न थमो,
संघर्ष ही है तुम्हारे सफलता का मार्ग।
सपनों को पंखों पर ले जाओ,
फलक को छूने का अपना इरादा बनाओ।
सफलता का मूल है अपार और दीर्घ,
पर उसके लिए रहो तैयार।
वेला की पठन में, हार मत मानो कभी,
साध के पीछे, आगे बढ़ो रुककर न कभी।
अपने आत्मनिष्ठा को, कभी न खोना,
हर अगम्य को, विजय का मौका बना लो।
लक्ष्य को पहचानो, उसे पाना है,
खुद को पहचानो, और अग्रसर करो।
चलो आगे बढ़ें, नव्य सफर पर निकलें,
कामना की उड़ान को हाथों में पकड़ लें।
तुम में है वो साहस, जो किसी भी संकट को हर सकती है,
प्रगति और अपने साध को वास्तविकता बनाओ, बिना किसी भय के।

लेखक व्याख्यातारू
राजूकुमार सिंह

हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा। सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा।



राजूकुमार सिंह द्वारा समस्त देशवासियों को हिंदी दिवस हार्दिक शुभकामनाएं

राजूकुमार सिंह

# उत्तर प्रदेश की राजधानी में हुआ जीएफ स्टार अवार्ड का शुभ मुहूर्त

देश प्रतिदिन

उत्तर प्रदेश की राजधानी में हुआ जीएफ स्टार अवार्ड का शुभ मुहूर्त चीफ गेस्ट दिनेश प्रताप सिंह( राज मंत्री ) और स्पेशल गेस्ट डॉक्टर विष्णु पुजारी (सालासर बालाजी महाराज महंत) और सबसे स्पेशल गेस्ट बॉलीवुड अभिनेता गौरव कुमार गौरव कुमार जी इस समय बॉलीवुड के उभरते हुए सितारों में से एक हैं जो अपनी दमदार अभिनय से बॉलीवुड में मुकाम बना चुके हैं कार्यक्रम के आयोजक अरविंद सक्सेना सिंगर माधुरी सिंह अभिनेता गौरव कुमार जी ने बताया की यूपी के और यूपी के बाहर भी जो अपने–अपने गांव और शहर नाम रोशन कर रहे हैं उनके लिए स्पेशल अवार्ड दिया जाएगा की मेहनत उन्होंने अपने जिले क्षेत्र में यूपी में यूपी के बाहर का नाम रोशन किया है उनको अपने कार्य के प्रति बहुत ईमानदारी से कर रहे हैं उनको अवार्ड दिया जाएगा माननीय दिनेश प्रताप सिंह ने सभी लोगों को शुभकामनाएं दी अपना आशीर्वाद दिया और डॉ विष्णु पुजारी सालासर बालाजी महाराज के महान ने सबको शुभकामनाएं दी आशीर्वाद दिया ऐसे ही सब लोग अपने क्षेत्र में अपने देश विदेश अपने देश अपने शहर का नाम देश विदेश तक पहुंचाएं इसमें यूपी से तो है ही बाहर से भी अवार्ड लेने के लिए आ रहे हैं अभिनेता गौरव कुमार ने बताया कि इस तरह के अवार्ड हर शहर हर जिले में होने चाहिए ताकि सभी कलाकारों को अपने काम में अप सकता बढ़े सबको पता चले कि उन्होंने अपने जिले या अपने गांव या अपने शहर का नाम रोशन किया है वह चाहे किसी भी फील्ड का हो वही सिंगर माधुरी सिंह ने बताया कि बच्चों में बहुत टैलेंट है सिंगिंग के मामले में तो सिंगर को भी अवार्ड दिया जा रहा है अरविंद सक्सेना जी ने बताया कि किसी भी कल हो अच्छे थ्रू मीडिया पर्सन हो सबको जो अपने–अपने काम में बेस्ट का ईमानदारी से कर रहा है उसको हम सब मिलकर अवार्ड देंगे





# संस्था कदम और थिएटर एवं फिल्म वेलफेयर एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में तीन पहियों का यमराज ष्पर हुई प्रेस वार्ता

देश प्रतिदिन



लखनऊ, संस्था कदम एक पहल सामाजिक परिवर्तन की ओर एवं थिएटर एवं फिल्म वेलफेयर एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में ष यूपी प्रेस क्लब लखनऊ ष में ष तीन पहियों का यमराज ष्पर आधारित एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया , जिसमें की संस्था के पदाधिकारी ने शहर में चल रहे ई– रिक्शा के संचालन संबंधित जानकारी दी और बताया कि ई–रिक्शा का निर्माण जनमानस व यातायात की सुविधा हेतु किया गया था परंतु आज इसका उपयोग सवारी ढोने हेतु कम व माल ढोने हेतु अधिक किया जा रहा है , चुंकि ई–रिक्शा के संरचना घटक और बनावट यात्री ढोने को ध्यान में रखकर किया गया , परंतु आज इसका उपयोग माल ढोने में किया जा रहा है , जिसके कारण चालक की दृष्टि बाधित होती है उनका संतुलन बिगड़ता है और जिसके कारण वह दुर्घटना का कारण बनते हैं जान माल का नुकसान होता है , इस क्रिया पर अंकुश लगाने व यातायात नियमों का सख्ती से पालन व निगरानी हेतु संस्था ने शहर के कई महत्वपूर्ण इलाकों में यातायात पुलिस कर्मियों के साथ बातचीत करी, यातायात के उच्च अधिकारियों को ज्ञापन सोपा और उनसे यात्री ई – रिक्शा पर यातायात नियमों के सख्त होने व चौराहो पर खड़े ट्रैफिक पुलिस कर्मियों के निगरानी हेतु आगरह किया गया, ताकि शहर में चल रहे नियमों को ताक पर रखकर यह यात्री ई– रिक्शा यातायात नियमों को पालन करें , जान माल का नुकसान ना करें और वेध लाइसेंस धारक चालक ही वाहन चलाएं, उसकी जांच करें ,वाहन की फिटनेस की जांच करें , संस्था द्वारा शहर में चलाए जा रहे अभियान में अभी यातायात से जुड़े अधिकारी व पुलिस कर्मियों को शामिल किया गया है अब संस्था का उद्देश्य वाहन स्वामी, चालक संगठन व एसोसिएशन , ज्ञापक से वार्ता शामिल होगी, इसके उपरांत यदि यातायात अधिकारियों द्वारा कोई सख्त कदम नहीं उठाया गया , तो मुख्यमंत्री जी से संस्था के पदाधिकारी अपनी बात रखेंगे ताकि शहर को इस तरह के लगाम यात्री ई – रिक्शा के मनमानी ढंग से यातायात नियमों को धता बताते जो संचालन हो रहा है उस पर कार्रवाई हो व लगाम लगाई जा सके एवं शहर को सुरक्षित और सुंदर किया जा सके ! प्रेस वार्ता में संस्था के सचिव अनुराग शुक्ला व थिएटर एवं फिल्म वेलफेयर एसोसिएशन के सचिव दबीर सिद्दीकी , आशीष सिंह , शशांक शेखर सिंह , रेनू शुक्ला , काव्य शुक्ला , अनवर बैग, अनुराग शुक्ला एवं अंशुमान दीक्षित मौजूद रहे!

# राजधानी को जलभराव से निजात दिलाने के लिए सुएज इंडिया ने अपने कर्मचारियों के कार्यों को सराहा

देश प्रतिदिन

लखनऊ, 13 सितम्बर 2023, सुएज इंडिया की टीम ने नगर आयुक्त के कुशल निर्देशन में नगर निगम की टीम के साथ मिलकर राजधानी में हुए जलभराव को तेजी से दूर करने में सफलता प्राप्त की। जहां पहले बारिश होने पर से कई दिनों तक जलभराव की समस्या बनी रहती थी, वहीं इस बीते रविवार की रात हुई भारी बारिश के बाद राजधानी लखनऊ शहर को 24 घंटे के अंदर ही जलभराव की स्थिति से निजात मिली। कर्मचारियों की इस प्रतिबद्धता के लिए सुएज इंडिया प्रबंधन के वरिष्ठ अधिकारियों ने उनका



आभार व्यक्त करते हुए मौके पर जाकर प्रोत्साहित एवम उनके कार्यों को सराहा। सुएज इंडिया ने मशीनों और संसाधनों को तत्परता से तैनात कर नगर निगम के साथ संयुक्त प्रयास से जलभराव वाले क्षेत्रों को तेजी से निकालने में सफलता प्राप्त की। सुएज इंडिया के प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री राजेश मठपाल ने इस चुनौतीपूर्ण स्थिति के दौरान स्वेज इंडिया टीम की अथक प्रतिबद्धता के लिए प्रशंसा व्यक्त की। उन्होंने कहा, ष मौसम विभाग द्वारा खराब मौसम की चेतावनी के बाद भी, सुरक्षा का पूरा ध्यान रखते हुए, इस संकट के समय में जलभराव वाले क्षेत्रों में राहत पहुंचाने में सुएज इंडिया टीम की अटूट समर्पण वास्तव में सराहनीय है। श्री मठपाल ने बताया कि सुएज इंडिया के कर्मचारियों के इन असाधारण प्रयासों के लिए आभार व्यक्त करने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए सुएज इंडिया के वरिष्ठ अधिकारी व्यक्तिगत रूप से मौके पर गए।

# डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने सीडीओ संग की समीक्षा

## बोलें, विकास की गति में पिछड़े प्रदेश के 100 विकासखंडों को मुख्य धारा से जोड़ेंगे



लखनऊ,(संवाददाता)। प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने बुधवार को प्रदेश के सभी जिलो के सीडीओ के साथ विकास कार्यों को लेकर लखनऊ के योजना भवन में की समीक्षा बैठक। इस दौरान राज्यमंत्री विजय लक्ष्मी गौतम और ग्राम विकास विभाग के सभी उच्चाधिकारी रहे मौजूद। प्रदेश के अंदर जो विकास कर चल रहे है उसको लेकर मुख्य विकास अधिकारी को आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए गए। डिप्टी सीएम ने अपने समीक्षा बैठक के दौरान कहा, सरकार की योजनाएं गरीबों तक और गांव–गांव तक पहुंचाने का काम किया जाए। वहीं केशव प्रसाद मौर्य ने बताया, प्रदेश में 826 विकासखंड हैं। प्रदेश के 100 विकासखंड है जो विकास की गति से पीछे छूट गए थे। उनको सरकार के मुख्य धारा से जोड़ने का काम किया गया है। इसको लेकर 4 सितंबर को यूपी के सभी बीडीओ के साथ सम्मेलन किया था।और अब स्मार्ट सिटी के साथ स्मार्ट विलेज के लिए पर हम लोग काम करेंगे। उन्होंने बताया कि हर शुक्रवार को एक विकास खंड में ग्राम चौपाल का आयोजन किया जाता है। मैं अधिकारी को बधाई देता हूं जिन्होंने चौपाल को आगे बढ़ने का काम किया और ढाई लाख समस्याओं का निस्तारण करने का काम किया है। हमने सभी से कहां है कि लगभग यूपी की 25 लाख समस्याओं को समाधान करने का काम करें। बैठक में कहां है कि श्रम शक्ति का सदुपयोग करना चाहिए क्योंकि श्रम शक्ति हमारे पास बढ़ी हैं। इनको और भी अधिक बढ़ावा दिया जाए। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश की सभी 59000 ग्राम सभाओं में सोलर लाइट लगाने का निदेश दिया गया है। हमारा लक्ष्य यह की उत्तर प्रदेश को गुजरात की तरह हम डेवलप करेंगे। जिलों में मुख्य विकास अधिकारी 60 विभागों का मुखिया होता है। सीडीओ कार्यालय में दो व्यक्ति लगाए जाएंगे जो लोगों की समस्याओं लिखकर देने का काम करेंगे। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश की 75 नदियों को पुनर्जीवित करने का काम किया जा रहा है। जिस तरह से वरुण नदी विलुप्त होती जा रही है उसको पुनर्जीवित करने का काम भी किया जा रहा है। देश के पैरामीटर में 45 ऐसे काम है जिसमें उत्तर प्रदेश अव्वल नंबर पर हैं। इसके साथ ही जो माफिया सरकारी जमीन पर कब्जा किए बैठे है उन पर शक्ति से कार्रवाई की जाए। अगर किसी गरीब ने सरकारी जमीन पर कोई निर्माण कराया है तो सबसे पहले वैकल्पिक व्यवस्था कराकर उन्हें शिफ्ट किया जाए।

# आजम खां के कई ठिकानों पर आईटी की रेड पर बोले डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य,

लखनऊ,(संवाददाता)। समाजवादी पार्टी के नेता आजम खां के कई ठिकानों पर आयकर की छापेमारी को लेकर अब सियासत तेज हो गई है। इसे लेकर जहां सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने सरकार पर निशाना साधा और इसे राजनीति से जोड़ा तो वहीं डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने इसे सिरे खारिज कर दिया। केशव ने कहा कि जांच एजेंसियां अपना काम स्वतंत्र रूप से कर रही है। इसे लेकर कुछ लोग राजनीतिक बयान देकर गलत दिशा दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर समाजवादी पार्टी यह समझ रही है कि कोई भी विपक्ष का नेता भ्रष्टाचार करे और उस पर कार्रवाई न हो ऐसा भाजपा सरकार में नहीं होगा। उन्होंने कहा कि जांच एजेंसियां अपना काम कर रही है। अपने कार्य को करने के लिए एजेंसियां पूर्ण रूप से स्वतंत्र है। डिप्टी सीएम ने कहा कि जब आजय कर विभाग अपना काम कर रहा है तो ऐसे में किसी राजनीतिक दल के नेता को ऐसे बयान नहीं देना चाहिए। उन्होंने एक सवाल के जवाब में का कि जो लोग निर्दोष होते हैं वो छूट जाते है। जो दोषी होता है उस पर कार्रवाई होगी। ऐसे में आयकर की छापेमारी को सरकार से जोड़कर नहीं देखना चाहिए। विकास कार्यों को लेकर की गई प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने यह बात कही है।बता दें कि आजम खां के कई ठिकानों पर आयकर की छापेमारी को लेकर सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने योगी सरकार निशाना साधा। उन्होंने ट्वीट कर ने कहा कि सरकार जितनी कमजोर होगी, विपक्ष पर छापे उतने बढ़ते जायेंगे। यह ट्वीट अखिलेश ने तब किया जब आजम खां के लगभग 30 से अधिक ठिकानों पर आयकर की छापेमारी कर रही है। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, आयकर विभाग की टीम उत्तर प्रदेश के रामपुर, सहारनपुर, लखनऊ, गाजियाबाद और मेरठ के अलावा पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश में कुछ परिसरों की तलाशी ले रही है। आयकर विभाग की जांच आजम और उनके परिवार के सदस्यों द्वारा संचालित कुछ न्यासों से संबंधित है। मिली जानकारी के मुताबिक, आजम खान पर छापेमारी अल जौहर ट्रस्ट को लेकर हुई है। जिस समय आयकर विभाग ने छापा मारा, उस समय सपा नेता आजम खान अपने रामपुर स्थित आवास पर थे। बता दें भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के आदेश पर आयकर विभाग की टीम सपा आजम खान के आवास पर सुबह से ही यह छापेमारी की करवाई कर रहे है। सूत्रों के मुताबिक, सपा विधायक और आजम खान के करीबी माने जाने वाले नसीर खान के घर पर भी आयकर विभाग का छापा जारी है। बता दें कि नसीर खान चमरौआ से सपा विधायक और आजम खान के जौहर ट्रस्ट में पदाधिकारी हैं।

# आनलाइन व्यापार के विरोध में व्यापारियों ने किया पुतला दहन

लखनऊ (संवाददाता)। प्रान्तीय व्यापार मण्डल के आवाहन पर लखनऊ व्यापार मण्डल के व्यापारियों ने आनलाइन दैत्य का पुतला इनकमटैक्स कार्यलय के सामने हजरतगंज लखनऊ में फूंका। व्यापारियों ने हाथ में तख्ती लिए हुए सरकार से खुदरा कारोबार को बचाने की गुहार लगायी। मुख्यमंत्री के नाम सम्बोधित ज्ञापन सौंपा।अध्यक्ष अमरनाथ मिश्र ने बताया कि हम ट्रेडर्स व्यापारियों के द्वारा एमएसएमई सहित असंगठित क्षेत्रों के लोंगो को रोजगार देते है दुकानदार एवं उनके कामगार लोगों को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से खुदरा बाजार से जुड़े है आनलाइन बाजार के कारण इन सबकी रोजी रोटी पर खतरा मंडरा रहा है।ऑन लाइन कम्पनिया लगातार टैक्स की चोरी कर रही है बेस्ट प्राइज जैसी फर्म जीएसटीएन पर ऐड ऑन कार्ड बना रही है जबकि प्रोपराइटर या पार्टनर के अलावा यदि कोई कार्ड बनाते है

# प्रदेश सरकार के उत्पीड़नात्मक रवैये के विरोध कामकाज ठप : रालोद

लखनऊ (संवाददाता)। राष्ट्रीय लोकदल प्रवक्ता अंकुर सक्सेना एडवोकेट ने उत्तर प्रदेश सरकार को अहंकारी एवं उसके उत्पीड़नात्मक रवैये के विरोध में उच्च न्यायालय सहित अदालतों एवं रजिस्ट्री कार्यालयों में 15 दिनों से कामकाज ठप है।उत्तर प्रदेश में आपातकालीन स्थिति विद्यमान होने के कारण प्रदेश के राज्यपाल से तत्काल राष्ट्रपति शासन लगाने की अनुशंसा की मांग की। अंकुर सक्सेना ने कहा कि हापुड़ में शांतिपूर्वक धरना देकर लौट रहे अधिवक्ता भाइयों के ऊपर पुलिस–प्रशासन द्वारा किया गया लाठीचार्ज ब्रिटिश हुकूमत की याद दिलाता है, तब जायज एवं संवैधानिक अधिकारों की मांग करने वालों के ऊपर उस समय की।

# कृषि क्षेत्र में व्यापक प्रसार हुआ, रबी की फसल में चना-मटर और मसूर को बढ़ावा देंगे : शाही

लखनऊ,(संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने पीएम कुसुम योजना को लेकर आज लोकभवन में प्रेस कांफ्रेंस की। बताया कि प्रदेश में सिंचाई की व्यवस्था के लिए पीएम कुसुम योजना के अन्तर्गत कुल 22514 सोलर पम्प की स्थापना कराया गया। इस वर्ष 30000 सोलर पम्प स्थापित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा 46.20 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही रबी की फसल में चना, मटर, मसूर की खेती को भी सरकार बढ़ावा देगी। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना को लेकर कृषि मंत्री ने बताया की इस योजना में लिए 114.23 करोड़ रुपए की धनराशि की उपलब्धता प्रथम किस्त के रूप में कराई गई है। कृषि क्षेत्र में धनराशि 63.87 करोड़ करना था जिसके सापेक्ष 14.88 करोड़ रुपए की प्रथम किस्त दी गई है। वही उद्यान क्षेत्र के लिए प्रस्तावित धनराशि 309.23 करोड़ रुपये दी जिसके सापेक्ष 28.01 करोड़ रुपये की धनराशि अवमुक्त कर दी गई है। और वही गन्ना क्षेत्र में प्रस्तावित धनराशि 1000 करोड़ रुपए के सापेक्ष 05.00 करोड़ रुपए की धनराशि दी गई है। सहकारिता विभाग की 110.18 के सापेक्ष 28.37 करोड़ रुपए की धनराशि प्रथम किस्त के रूप में स्वीकृति की गई है। कुल 103 पैक्स में 100 मी०टन क्षमता के गोदाम हेतु 48.65 करोड़ रुपए के सापेक्ष प्रथम किस्त 10.46 करोड़ रुपए अवमुक्त किया गया और 250 मी०टन की क्षमता के लिए 23.04 करोड़ रुपये के सापेक्ष 10.00 करोड़ रुपए की धनराशि प्रथम किस्त के रूप में अवमुक्त कर दी गई।

# अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन 28 अक्टूबर को लखनऊ में करेगा वैश्य संकल्प रैली का आयोजन : सुधीर एस हलवासिया

## 30 हजार से ज्यादा वैश्य परिवार के सदस्य करेंगे भागीदारी

देश प्रतिदिन

लखनऊ। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन की राज्य स्तरीय बैठक का आयोजन हलवासिया कोर्ट लखनऊ में किया गया जिसमें अक्टूबर माह में होने वाली वैश्य महा रैली के आयोजन के संबंध में विस्तृत चर्चा की गई। बैठक के बाद एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया जिसको संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष सुधीर एस हलवासिया ने कहा कि उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में 28 अक्टूबर को अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के द्वारा विशाल वैश्य संकल्प रैली का आयोजन किया जाएगा। इस रैली में पूरे प्रदेश से लगभग 30 हजार से ज्यादा वैश्य परिवार के सदस्य भागीदारी करेंगे। इस सम्मेलन के द्वारा वैश्य समाज के सभी उपवर्गों को एक साथ मंच पर लाया जाएगा। उन्होंने बताया कि वैश्य संकल्प महा रैली का मुख्य उद्देश्य वैश्य समाज को एक मंच पर लाना है और समाज को यह संदेश देना है कि की वैश्य समाज की भागीदारी हर क्षेत्र में हो, जिला स्तर पर कम से कम एक विधायक और मंडल स्तर पर एक सांसद हमारे समाज से हो।उन्होंने कहा कि वैश्य समाज लगातार महाराजा अग्रसेन के सिद्धांतों पर चल कर समाज हित में कार्य करता रहेंगा। इसके लिए संगठनात्मक दृष्टिकोण से पूरे उत्तर प्रदेश को 6 जोन में विभाजित किया गया है जिसमें 18 मंडलों की बैठक होगी। 30 सितंबर तक प्रदेश के सभी 18 मंण्डलों की बैठक पूरी कर ली जाएगी। इस वैश्य संकल्प रैली को सफल बनाने के लिए आज व्यापक चर्चा हुई, जिसके बाद पूरे प्रदेश में बैठक की जाएगी। इसी क्रम में कल टीम द्वारा बरेली जोन में तीन मंडलों की बैठक होगी। आज की इस बैठक में पूर्व विधायक,राष्ट्रीय महामंत्री व प्रदेश प्रभारी उमेश अग्रवाल,प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष व पूर्व विधायक संजय गुप्ता, सह संयोजक पवन कुमार गुप्ता , सुनील रामा, युवा प्रदेश अध्यक्ष श्री राम अग्रवाल और युवा प्रदेश उपाध्यक्ष राहुल राज रस्तोगी सहित सभी अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के वरिष्ठ पदाधिकारी और सदस्य मौजूद थे।

# राजधानी लखनऊ में एकलव्य समाज पार्टी का 17 वां स्थापना दिवस मनाया गया

देश प्रतिदिन

लखनऊ,एकलव्य समाज पार्टी का 17वां स्थापना दिवस पार्टी कार्यालय ।ळ– 2 विधायक निवास– 3 ओ.सी.आर. विधानसभा मार्ग लखनऊ पर बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पार्टी के सभी जिलों के जिला अध्यक्ष वरिष्ठ पदाधिकारीगण की मौजूदगी में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चंद्रशेखर निषाद ने कहा, निषाद समुदाय का सबसे बड़ा मुद्दा निषाद आरक्षण को लागू कराना है। परंतु कुछ असामाजिक बहुरूपिया लोगों ने इस भोले–भाले समाज को धोखे में रखकर बड़ी बड़ी रैलियां व सम्मेलन समाज का कराया गया और जब समाज के मुद्दे को देश व प्रदेश सरकार के सामने रखने की बात पर अपने पांव पीछे खींच लिया तब वे अपने स्वार्थ सिद्धि करने में लग गए जिससे समाज को बहुत पीड़ा हुई। वे धोखेबाज बरगलाने वाले कोई और नही सत्ता के दलाल बन समाज को बेचने का कार्य किया है। समाज का ठेकेदार बन पैसा बटोरने में लग गए समाज जस का तस वही आज भी खड़ा मूक दर्शक बन कर रह गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चंद्रशेखर निषाद ने कहा, जब उत्तर प्रदेश के लखनऊ, उन्नाव, आगरा आदि कई जिलों में भारत सरकार के गजट 1961 में निषाद मल्लाह, मांझी, मझवार को एस.सी. में माना गया है, तो उन्हें तहसील वा जिलाधिकारी स्तर से एस.सी. प्रमाण पत्र निर्गत नहीं किया जाता है। जबकि उनके स्तर से कहा जाता है कि ये जातियां ओ.बी.सी. में है, तो सरकार का गजट क्यों जारी किया गया था। यहां पर यह भी बताना चाहता हूं कि हमारे देश का संविधान एक, देश का कानून एक व नागरिक एक तो हमारे –साथ भेदभाव क्यों? हमारे देश के 18 प्रदेशों में निषाद कश्यप बिंद मल्लाह को एस.सी. में रखा गया है। और उत्तर प्रदेश में ओ.बी.सी. में रखकर उनके हक अधिकार को वर्षों से लूटा जा रहा है। इससे समाज में बहुत आक्रोश है। इन्हीं सब मुद्दों को लेकर निषाद समुदाय से एकलव्य पार्टी वादा करती है कि निषाद आरक्षण मुद्दा सर्वप्रथम एकलव्य समाज पार्टी ने उठाया था और उस मुद्दे को पूरा करने के लिए संकल्पबद्ध है। जब तक निषाद समुदाय को आरक्षण मिल नहीं जाता तब तक पार्टी चौन से नहीं बैठेगी ना किसी से समझौता करेगी लोकसभा चुनाव से पहले सरकार से एकलव्य समाज पार्टी मांग करती है की वर्षों से लंबित पड़े निषाद आरक्षण मुद्दे को हल कर सरकार निषाद समुदाय को भी जीने का अधिकार मुहैया कराए नही तो एकलव्य समाज पार्टी पूरे उत्तर प्रदेश व देशभर जन–जागरण अभियान चलाकर अपनी मांगों को मनवाने के लिए सरकार पर दबाव बनायेगी। इस अवसर पर मुख्य रूप श्री जे.एम दयाल राष्ट्रीय महासचिव,

अनुज गुप्ता राष्ट्रीय महासचिव, अनिल कुमार वर्मा राष्ट्रीय महासचिव, विनय सिंह राष्ट्रीय सलाहकार, सुरेन्द्र मोहन गांधी, प्रदेश अध्यक्ष, राकेशमणि पाण्डेय, प्रदेश महासचिव, संजय कश्यप प्रदेश सचिव, नरेंद्र कश्यप प्रदेश संयोजक, रामू निषाद जिला अध्यक्ष लखनऊ, अवधेश कश्यप नगर अध्यक्ष लखनऊ, राम प्रसाद निषाद जिला अध्यक्ष श्रावस्ती, सतनाम निषाद जिला अध्यक्ष बाराबंकी, विशाल निषाद सभासद पट्टी वार्ड बाराबंकी, इंदु देवी कश्यप जिला अध्यक्ष महिला मोर्चा लखनऊ, अंदीप सिंह चौहान, अभिसेख गुप्ता, सनी जोशी, अर्पित कश्यप, प्रद्युम्न, ईशान सिंह, प्रदीप शर्मा, योगेश आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

# एसिक्स ने भारत के टॉप मैन्स सिंगल्स प्लेयर सुमित नागल के साथ अपने एथलीट्स की टीम को बनाया सशक्त

देश प्रतिदिन

लखनऊ, जाने–माने जापानी स्पोर्ट्स परफोर्मेन्स ब्राण्ड एसिक्स ने भारत के टॉप मैन्स सिंगल्स टेनिस खिलाड़ी सुमित नागल के साथ साझेदारी की घोषणा की है। यह आधिकारिक घोषणा लखनऊ स्थित ऑफिशियल एसिक्स स्टोर में आयोजित विशेष कार्यक्रम के दौरान की गई, जो भारत की टॉप टेनिस प्रतिभा को बढ़ावा देने और उन्हें सशक्त बनाने की एसिक्स की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। वर्तमान में सुमित नागल के पास मैन्स सिंगल्स टेनिस में भारत के रैंक 1 का खिताब है। एसिक्स के साथ उनकी साझेदारी उनकी यात्रा में नया बेंचमार्क होगी, जो उनके परफोर्मेन्स को और भी बेहतर बनाएगी। अबसे प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं के दौरान नागल एसिक्स के परिधानों और फुटवियर में नजर आएंगे। उनका असाधारण कौशल, अटूट समर्पण और खेल के लिए गहन प्रतिबद्धता, एसिक्स के कोर मूल्यों के अनुरूप हैं, ऐसे में ब्राण्ड का उनसे जुड़ना स्वाभाविक है। टेनिस प्रतिभा को बढ़ावा देने के प्रयास में सुमित नागल के साथ एसिक्स की साझेदारी ब्राण्ड का एक और उल्लेखनीय कदम है, जब टेनिस के अन्य दिग्गज जैसे रोहण बोपान्ना और करमन कौर थांडी पहले से ब्राण्ड के साथ जुड़े हुए हैं। ये तीनों असाधारण एथलीट्स, ताकत, क्षमता और समर्पण जैसे गुणों का प्रतीक हैं जो एसिक्स का पर्याय हैं। इस घोषणा पर श्री रजत खुराना, मैनेजिंग डायरेक्टर, एसिक्स इंडिया एण्ड साउथ एशिया ने कहा, ''सुमित नागल के साथ साझेदारी करते हुए हमें बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है। टेनिस के प्रति सुमित का समर्पण और जुनून बेजोड़ है। हमें गर्व है कि हमें सुमित की इस यात्रा को सपोर्ट करने का अवसर मिला है और उम्मीद करते हैं कि वे इसी तरह सफलता की नई ऊँचाईयां छूते रहेंगे।'' ''एसिक्स भारत में टेनिस प्रतिभा को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है और हमारे एथलीट्स के रोस्टर में सुमित को शामिल करते हुए हमें बेहद गर्व का अनुभव हो रहा है। हमारा मानना है कि सुमित भारत के महत्वाकांक्षी टेनिस खिलाड़ियों के लिए रोल मॉडल हैं और आने वाले सालों में हम उनकी उपलब्धियों को देखने के लिए उत्सुक हैं।' उन्होंने कहा। इस साझेदारी पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सुमित नागल ने कहा, ''एसिक्स के साथ जुड़ते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है, एक ब्राण्ड जो मेरी तरह खेल के प्रति जुनून और उत्साह रखता है। ब्राण्ड के साथ इस यात्रा की शुरूआत टेनिस की दुनिया में नई ऊँचाईयों तक पहुंचने के हमारे एक समान लक्ष्यों को दर्शाती हैं मुझे विश्वास है कि यह साझेदारी मुझे टेनिस कोर्ट में अपनी पूर्ण क्षमता का प्रदर्शन करने में मदद करेगी।' इस अवसर पर एसिक्स ने लखनऊ स्थित अपने स्टोर में एक मीडिया कार्यक्रम का आयोजन किया, जहां प्रशंसकों, मीडियागणों एवं खेल प्रशंसकों को सुमित नागल, रोहण बोपान्ना और करमन कौर थांडी से मिलने का मौका मिला।

# किन्नर प्रियंका रघुवंशी ने बड़ी धूमधाम से मनाया भगवान श्री कृष्ण छठी का महोत्सव

देश प्रतिदिन

लखनऊ । सभी जगह श्री कृष्ण भगवान की छठी का महोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया । मंदिरों सहित लोगों ने घरों पर भी श्री कृष्ण की छठी मनाई। इसी क्रम में राजधानी लखनऊ में समाजसेविका किन्नर प्रियंका रघुवंशी द्वारा अपने घर पर बड़े ही भव्य तरीके से भगवान कृष्ण का छठी उत्सव मनाया गया। जिसमें सर्व समाज के लोग सम्मिलित हुए। कृष्णा राधा के भक्ति गीतों ने सभी भक्तों को नाचने पर मजबूर कर दिया। सभी भक्तगण भगवान कृष्ण की भक्ति में लीन होकर भगवान के आगे नतमस्तक हो गए। इस मौके पर किन्नर प्रियंका रघुवंशी ने कहा कि उनके आवास पर समय–समय पर इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है इन कार्यक्रमों के माध्यम से वह लोगों से मिलती हैं उनसे एक जुड़ाव महसूस करती हैं इसके साथ ही उन्होंने कहा कि उनके द्वारा आयोजित की गई ट्रांसजेंडर प्राइड वॉक के लिए वह सभी का धन्यवाद करती हैं कि सभी समाज के लोगों ने उसे इतना समर्थन दिया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि उनका मुख्य उद्देश्य है कि किन्नर समाज के लोगों को भी समाज की मुख्य धारा में शामिल किया जाए और उन्हें भी आगे आने के लिए बेहतर विकल्प दिए जाएं। जिस प्रकार समाज ने उनका समर्थन किया उन्हें प्यार दिया और उन्हें आगे बढ़ाया उसे प्रकार ही वह अपने किन्नर समाज की सभी लोगों का उत्थान चाहती हैं और चाहती है कि सरकार द्वारा भी किन्नर समाज के लिए कुछ बेहतर नीतियां बनाई जाए उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार की बेहतर से बेहतर विकल्प दिए जाएं ताकि वह भी एक अच्छी जिंदगी बिता सके। अंत में उन्होंने अंत में प्रियंका रघुवंशी ने सभी के मंगल जीवन की कामना करते हुए भगवान श्री कृष्ण के जयकारे लगाए। कार्यक्रम में फूलों की होली भी खेली गई। पूरा माहौल कृष्ण की भक्ति में डूब गया।

# दिल्ली उच्च न्यायालय का आदेश आया कि भोजपुरी गायक खेसारी लाल यादव 30 सितंबर, 2025 तक केवल ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन को गाने बेचेंगे

## शत्रुन कुमार उर्फ खेसारी लाल यादव 30 सितंबर 2025 तक अपने नए गाने थर्ड-पार्टी वितरकों या म्यूजिक कंपनियों को नहीं बेच सकते

देश प्रतिदिन

लखनऊ,13 सितंबर, 2023 – ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन ने उद्योग में हो रही चर्चाओं को देखते हुए अपने अंशधारकों एवं आम जनता को प्रतिष्ठित कलाकार, श्री खेसारी लाल यादव के साथ अपने विशेष गठबंधन के बारे में विस्तार बताया। दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति मनमोहन और न्यायमूर्ति सौरभ बनर्जी की खंडपीठ ने गायक और अभिनेता, खेसारी लाल के खिलाफ चल रही कानूनी कार्यवाही में ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन के पक्ष में अपना फैसला सुनाया है। न्यायालय ने इस आदेश द्वारा 30 सितंबर, 2025 तक श्री यादव पर अपने नए गानों को बेचने या वितरित करने के लिए ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन के अलावा किसी अन्य कंपनी से गठबंधन करने पर रोक लगा दी है। इस आदेश ने यह सुनिश्चित कर दिया है कि श्री खेसारी लाल द्वारा ग्लोबल म्यूजिक कंपनी के साथ एक्सक्लूसिव व्यवसायिक साझेदारी के अलावा कोई भी अन्य साझेदारी, खघसकर अन्य म्यूजिक कंपनियों या वितरकों के साथ, अदालत के आदेश का सीधा उल्लंघन होगी। ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन के फाउंडर एवं सीईओ, श्री राजकुमार सिंह ने कहा, "हम दिल्ली उच्च न्यायालय के आभारी हैं, और खेसारी लाल यादव के साथ हमारे गठबंधन के पक्ष में दिये गये उनके फैसले का सम्मान करते हैं। वो हमारे रोस्टर में एक मुख्य कलाकार हैं, और हम अपने समझौते के पूरे होने की अवधि तक इस एक्सक्लूसिव गठबंधन को बनाए रखने के लिए तत्पर हैं। ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन सदैव से संगीत क्षेत्र के दिग्गजों को अपने साथ शामिल करने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। अपने मुख्य सिद्धांतों का पालन करते हुए हम अपने दर्शकों को बेहतरीन संगीत पेश करते रहेंगे, और पूरी दुनिया में संगीतप्रेमियों के लिए उच्च गुणवत्ता का संगीत बनाते रहेंगे। हम अन्य संगीत कंपनियों, प्रोडक्शन हाउस, इवेंट आयोजकों और वितरकों सहित सभी औद्योगिक अंशधारकों से आग्रह करते हैं कि वो न्यायालय के इस आदेश का पालन करें।" ग्लोबल म्यूजिक और खेसारी लाल यादव ने 27 मई, 2021 को एक प्रोडक्शन समझौता किया था, जिसके अंतर्गत उन्हें ६5 करोड़ की राशि में 30 महीनों में 200 गानों की एक्सक्लूसिव रचना और निर्माण करना था। इस समझौते के अन्तर्गत निर्मित संपूर्ण सामग्री, गीतों की पूरी बौद्धिक संपदा का स्वामित्व ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन का था। अब इस अनुबंध को 30 सितंबर, 2025 तक बढ़ा दिया गया है। 5 सितंबर 2023 को खंडपीठ ने पूरा विचार करने के बाद निर्णय दिया कि यादव का आचरण ईमानदार या निष्पक्ष नहीं था, और ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन के पक्ष में अपना फैसला सुनाया। न्यायालय ने इस फैसले का गलत अर्थ निकालने के दावों को खघरिज किया और स्पष्ट किया कि यह प्रतिबंध यादव को अपने व्यापार या पेशे का अभ्यास करने से नहीं रोकता है। न्यायालय ने यादव पर 30 सितंबर, 2025 तक किसी भी तीसरे व्यक्ति और ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन के किसी भी प्रतियोगी को श्री यादव का कोई भी नया गाना बेचे जाने पर रोक लगा दी। इस आदेश के अन्तर्गत खेसारी लाल यादव को अभी भी भोजपुरी फिल्म उद्योग में सक्रिय हिस्सा लेने, राष्ट्रीय टीवी चौनलों पर प्रदर्शन करने, अपने सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का उपयोग करने, और मंच पर दर्शकों का मनोरंजन करने की अनुमति है। लेकिन, वो अपने नए गाने वितरकों, संगीत कंपनियों और निर्माताओं को नहीं बेच सकते हैं। अदालत के आदेश के किसी भी उल्लंघन को, न केवल इस समझौते का उल्लंघन माना जाएगा, बल्कि वह माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश की अवमानना भी होगा। सिंह ने कहा, "हम कॉन्ट्रैक्ट की अखंडता और निष्पक्षता के सिद्धांतों को बनाए रखने की अटूट प्रतिबद्धता के लिए न्यायिक प्रणाली और माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। उनका निर्णय कलाकारों और संगीत कंपनियों के लिए विश्वास और आपसी सम्मान के साथ सहयोगपूर्वक काम करने का अनुकूल माहौल सुनिश्चित करता है"

# सामुदायिक शौचालय के चारो तरफ लगा पानी, ग्रामीणों को हो रही परेशानी

देश प्रतिदिन

– सहजनवा गोरखपुर। पाली ब्लाक के ग्राम पंचायत भिटहा में बने सामुदायिक शौचालय चारों तरफ विगत एक महीना से पानी से घिरा हुआ है। इससे ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों की सुविधा के लिए बने बने सुलभ शौचालय एक महीने से पानी से घिरा हुआ है। जल निकासी की समुचित व्यवस्था न होने से बारिश का पानी भर गया है। पानी भर जाने से ग्रामीण इसका उपयोग नही कर पा रहे है। जिम्मेदार द्वारा इस तरफ ध्यान न देने से नाराजगी है। सामुदायिक शौचालय की देख रेख कर रही रेशमा ने कहा कि जलनिकासी के लिए कई बार मौखिक रूप से प्रधान और सेक्रेटरी से कहा गया पर किसी ने कोई कार्रवाई नही की। इससे महिलाओं को काफी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इस संबंध में सचिव धनेंद्र सिंह से बात की गई तो उन्होंने कहा कि मुझे अभी गांव का चार्ज नही मिला है जैसे ही चार्ज मिलता है जलनिकासी की व्यवस्था की जाएगी।

# शादी का फर्जी प्रमाण बना डॉक्टर से एक करोड़ लिए,

लखनऊ,(संवाददाता)। लखनऊ में एक रिटायर आईएएस अधिकारी के डॉक्टर बेटे को नेपाल मूल की महिला ने ब्लैकमेल किया। पिछले दस साल में 84 लाख कैश में, जबकि 25 लाख रुपए की जमीन और जेवर हड़प लिए। पीड़ित का कहना है कि आरोपी महिला पार्वती एक संगठित गिरोह चला रही है। जिसने फर्जी मैरिज सर्टिफिकेट बनवाकर ठगी की है। इंदिरानगर थाना पुलिस निजी मेडिकल कॉलेज में तैनात एसोसिएट प्रोफेसर की तहरीर पर एफआईआर दर्ज कर मामले की जांच कर रही है। गोमतीनगर के विनीत खंड निवासी निजी मेडिकल कॉलेज में एसोसिएट प्रोफेसर का कहना है कि उनके पिता केंद्र सरकार में ज्वाइंट सेक्रेटरी का पद से रिटायर आईएएस हैं। वहीं भाई और परिजन अच्छे पद पर हैं। पिछले दस साल से नेपाल निवासी पार्वती एक फर्जी शादी का सर्टिफिकेट बनवाकर ब्लैकमेल कर रही है। जो इन्दिरानगर के वैशाली इंक्लेव में रहकर अपने आठ–दस सहयोगियों के साथ मिलकर सेक्सटार्शन गिरोह चला रही है। जिसमें वकील से लेकर पंडित तक शामिल है। पार्वती पत्नी होने का दावा करके 84 लाख रुपए नकद, मोहनलालगंज स्थित एक जमीन, सोने का ब्रेसलेट, चेन व अंगूठी आदि ले चुकी है।

# सहजनवा ब्लाक के ग्राम पंचायत परमेश्वरपुर मे बना अमृत सरोवर व पंचायत भवन चढ़ा भ्रष्टाचार की भेट

## सहजनवां विकास खंड के लगभग अनेकों ग्राम पंचायत में अधूरा दिखा अमृत सरोवर व पंचायत भवन

देश प्रतिदिन

सहजनवा तहसील क्षेत्र के सहजनवां ब्लॉक के ग्राम सभा परमेश्वरपुर में लाखों की लागत से बना था अमृत सरोवर व पंचायत भवन लेकिन चढ़ गया भ्रष्टाचार की भेट ग्राम सभा में बने अमृत सरोवर का कार्य अभी भी अधूरा पड़ा है पोखरे पर अभी पूरा कार्य नही दिख रहा है वही ग्रामसभा मे अधूरा पंचायत भवन का भी निर्माण अधूरा दिख रहा है वही पंचायत भवन में निर्माण कार्य में दोयम दर्जे के इटो का प्रयोग किया गया है वही सामुदायिक शौचालय का भी हाल पूरी तरह से बदहाल दिख रहा है, ग्राम सभा में सरकारी धन का दुरुपयोग किया गया है ग्राम पंचायत में हुए तमाम विकास कार्यो मे घोर अनियमितता दिखाई दे रही हैं वही सिग्रेटरी अभय कुमार का कहना था कि ग्राम सभा में हुए अमृत सरोवर निर्माण कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है जल्द अमृत सरोवर का कार्य पूर्ण करा दिया जायेगा वही पंचायत भवन के कार्य में धन की कमी के कारण कार्य अधूरा है वही पूर्व के ग्राम प्रधान द्वारा दीवाल बनवाया गया था बाकी निर्माण कार्य अधूरा था बर्तमान प्रधान द्वारा अपने पास से पैसा लगा कर छत का निर्माण कराया गया है आखिर सोचने वाली बात है कि पंचायत भवन निर्माण का धन कहा गया देखा जाये तो कही न कही सरकार के धन का बंदरवाट किया गया है वही जिमेदार मुखदर्शक बने हुए हैं। इस भ्र्ष्टाचार मे ग्राम प्रधान और सचिव मील कर पूरी तरह से भ्र्ष्टाचार कर रहे हैं ।वही सहजनवां ब्लाक के लगभग दर्जन गांव में करोड़ों से ऊपर रुपए की धनराशि स्वीकृत की गई वही अमृत सरोवर का कार्य पिछले वर्ष सन 2022 में ग्रामीण इलाकों में पानी की बढ़ती समस्या को देखते हुए सरकार द्वारा इस योजना को लागू किया गया। हम आपको बता दे जहां एक तरफ सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में हर समस्याओं के समाधान के लिए अनेकों योजनाएं चलाई जा रही हैं। वहीं दूसरी तरफ भ्रष्टाचार में विलुप्त ग्राम प्रधान व सचिव के कारनामों से अधिकारी भी अनजान हैं। हर ग्राम पंचायत में लगभग सभी गांव में बरसों पहले से जो पुराने तालाब और पोखरे थे। उसी पोखरे पर सीढी,चौकी सहित, कार्य के नाम पर खाना पूर्ति किया गया कुछ वही गांव की ग्रामीणों ने बताया हम लोगों के गांव में जो पुराने पोखरे थे। इस पोखरो पर खाली नाम मात्र काम किया गया है। बीते ढाई साल और बचे हैं प्रधानी कार्यकाल को अगर इसी तरह से पोखरे का अधूरा निर्माण कार्य पूरी करने की तैयारी होगी तो पूरा होते–होते प्रधानी कार्यकाल ही समाप्त हो जाएगा। और फिर से वही नया ड्रामा शुरू हो जाएगा। अब देखना यह है कि अमृत सरोवर के अधूरे कार्य बीते ढ़ाई सालों में पूरा होता है। या फिर एक प्रश्नवाचक चिन्ह के तरह ही रह जाएगा। अमृत सरोवर को लेकर जिम्मेदार पूरी तरह से चुपी साधे हुए दिखाई दे रहे है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक कवल जीत सिंह इण्डिया ऑफसेट ,मशकगंल, लखनऊ से मुद्रित, एवं 551घ / 15,नटखेडा रोड,आलमबाग लखनऊ उ0प्र0से प्रकाशित।
सम्पादक
कवल जीत सिंह
मो0 9807725000

R.N.I.No.
UPHIN/2007/25376

नोटः समाचार पत्र से संबधित सारे विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा ।